धार के खिलाफ

सम्पादक
पाण्डेय कपिल
भगवती प्रसाद द्विवेदी

धार के खिलाफ

(भोजपुरी गीत-संकलन)

सम्पादक:
पाण्डेय कपिल
भगवती प्रसाद द्विवेदी

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना-24

धार के खिलाफ

(भोजपुरी गीत संकलन)

सम्पादक: ० पाण्डेय कपिल
० भगवती प्रसाद द्विवेदी

प्रकाशक: अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन,
मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800 024
संस्करण: पहिला, सन् 2001 ई०
आवरण: एम० नारायण
दाम: एकावन रुपया
फोटो कम्पोजिंग : जे० एम० कम्प्यूटर्स,
पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-3
मुद्रक: न्यू प्रिन्ट लाइन प्रेस पटना-.

DHAAR KE KHILAF

A Collection of Bhojpuri Lyrics

Edited by
Pandey Kapil & Bhagawati Prasad Dwivedi

प्राक्कथन

गीत : भोजपुरिया जिनिगी के धड़कन

घनीभूत पीर के कोख से जनमेला गीत । जब दुःख-दरद, वेदना आ पीड़ा बेसम्हार हो जाला, त ओही दुखद अनुभूतियन के सुखद आ प्रभावी अभिव्यक्ति गीत का जरिए होला । साँच पूछल जाउ त बेगर गीत के जिनिगी के कवनो माने-मतलब ना रहि जाला । आखिर जिनिगी-जगत के कवना कोना-अँतरा में गीत के गूँज नइखे ? कुदरत के हरेक हरकत में एकर सुर बखूबी सुनल-गुनल जा सकेला । चिरई-चुरुंग के चहचहाहट में, नदी-पोखरा, ताल-तलइया के प्रवहमान जल में, कुहुकत कोइलर आ पिहिकत पपिहरा के विरह-वेदना में गीते के नू अनुगूँज सुनाई देला । आदिकाल से लेके आज ले परम्परा के संगलेहर बनल गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी रग-रग में रचल-बसल आ रहल बा । अगर गीत के दफना दिहल जाउ त सउँसे जिनिगी आ दुनिया के क्रिया-कलाप मसाने नू बनि के रहि जाई !

भोजपुरिया समाज में त गीत केन्द्रीय विधे भर ना, बलुक जिनिगी के धड़कनो ह । इहे ओजह बा कि पैदाइश से लेके मउवत ले कवनो संस्कार गीत के बेगर पूरा ना होला । इहाँ त मउवतो पर गीत बा आ गारियो गवाला गीते में । असल में लोकजीवन के जीवंतता के निशानी ह गीत । चाहे सुख होखे भा दुःख, हँसी होखे भा विषाद, सिंगार-अहवात-मिलन होखे भा बिछोह-हरेक रंग-रूप, रस-गंध के सवदगर अहसास भोजपुरी गीत करावत आइल बाड़न स । जरि से जुड़ाव आ माटी के सोन्ह-मीठ गमक इन्हनीं के खासियत रहल बा । अपना के 'राम के बहुरिया' मानिके आडम्बर-रूढ़ियन पर चोट करत कबीर के पद-गायन, आजादी के लड़ाई में क्रान्तिकारियन के देश-सेवा के सबक देत 'बटोहिया' गीत, महेन्दर मिसिर के 'पूरबी', सामाजिक कोढ़ के समूल नाश करे खातिर जनचेतना जगावत भिखारी ठाकुर के जागरण-गीत, घर-परिवार, प्रकृति, गाँव-जवार, देश-दुनिया के खोज-खबर-हर पहलू के गहिर-गझिन अभिव्यक्ति भोजपुरी गीतन में होत आइल बा । एकरा शोहरत के बुलन्दी के आलम ई बा कि मोती बी. ए. के गीतन के मार्फत फिल्मी दुनिया में पइसल भोजपुरी गीत हर जगह आपन सिक्का जमा चुकल बा आ कैसेट कम्पनियन खातिर कम-से-कम लागत से अधिकाधिक दरब उगाहेवाला इहे धन्हा बा ।

बाकिर ई त भइल सिक्का के एक पहलू । दोसरका पहलू ई बा कि आज फूहड़-अश्लील-दुअर्थी गीत आ गायकी के बदौलत भोजपुरी के बहुत बदनामी हो रहल बा अउर कुछुए सड़ल मछरी एह साफ-फरीछ भोजपुरी गीत के दरियाव के गन्दा कर रहल बाड़ी स । अइसना घिनावन हरकत में अझुराइल गीतकारन-गायकन के मानसिक विकृति अब बरदास से बहरिया चुकल बा । एह

पर अंकुश लगावल आ एह दिसाई सरकार के कड़ा कदम उठावे प अलचार कइल भोजपुरिया समाज के दायित्व बा ।

भोजपुरी के मूल सुभाव आ रचाव गीत के ह। एक बेरि जब डॉ॰ केदारनाथ सिंह ई बात कहले रहलीं त कुछ लोग नाक भौं सिकोड़ले रहे, बाकिर असलियत के भला कब ले अनदेखा कइल जा सकेला ? आज हिन्दी-उर्दू के देखा-देखी गजल में ना खाली भेड़ियाधँसान हो रहल बा, बलुक गीत के भोजपुरिया समाज से काटे आ भोजपुरिया प्रकृति के कृत्रिम चकाचौंध में अझुरावे के साजिशो चलि रहल बा । जब ले समरथी गीतकार आगा ना अइहन, घटिहा गीतन के घटाटोप से निजात ना मिलि पाई । सरकारी मीडिया, मंच आ इलेक्ट्रॉनिकी मायाजाल से मुकुती पाके आज कुछुए गीतकार अपना स्तर के बरकरार राखि पवले बाड़न । तुक्कड़न, भाँड़न, देहदेखाऊ नारी-गायकी के दौर में गीत के परान साँसत में बा ।

भोजपुरी गीत के दमदार बनवले रही एकरा भावपक्ष के वैविध्य, कलापक्ष के कलात्मक कौशल आ यथार्थ से गम्हीर जुड़ाव । एही दम का चलते गीत कबो बेदम ना होई । 'भोजपुरी' से लेके अब तक के मए भोजपुरी पत्रिकन खातिर गीत छापल मजबूरी बा, भलहीं ऊ कवनो विधा के पत्रिका होखो । बाकिर एने भोजपुरी के कवनो पत्रिका के गीत विशेषांक ना आइल रहे । सम्मेलन एह अभाव के शिद्दत में महसूसलस आ 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के मार्च-मई, 2001 अंक गीत विशेषांक का रूप में प्रकाशित कइलस । अब सम्मेलन का ओर से भोजपुरी गीत-नवगीत के ई संकलन 'धार के खिलाफ' सउँपत दिली खुशी हो रहल बा । प्रयास ई बा कि आज लीखि से अलगा हटि के 'धार के खिलाफ' टटका बिम्ब-प्रतीकन का जरिए जियतार ढंग से लिखात भोजपुरी गीत के एगो झलक पढ़निहार-गुननिहार के मिले, बाकिर 'लोको' से सरोकार बनल रहे । सम्मेलन सभकरा नेह-छोह खातिर कृतज्ञ बा ।

गीत लय, नाद, छन्द के सरस सम्मिलन ह, जवना का बीचे अंत:सलिला-अस शब्द का संगे बहेले तरल, तल्ख आ सघन अनुभूति । इन्हनीं में से एकहू के तार छूटल कि छन्द बिखरल आ लय टूटल । नेही-छोही भाई-बहिन के मए तार गीत आ सम्मेलन से अइसहीं जुड़ल रही, एकर भरपूर भरोसा बा । संकलन 'धार के खिलाफ' पर रउरा सभके आशीर्वाद के इंतजार रही ।

भगवती प्रसाद द्विवेदी
महा मंत्री
अ॰ भा॰ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पोस्ट बाक्स 115, पटना-800 001

भोजपुरी गीत के भाव-भंगिमा

डॉ. अशोक द्विवेदी

कविता का बारे में साहित्य शास्त्र के आचार्य लोगन के कहनाम बा कि कविता शब्द-अर्थ के आपुसी तनाव, संगति आ सुघराई से भरल अभिव्यक्ति हऽ । कवि अपना संवेदना आ अनुभव के अपना कल्पना-शक्ति से भाषा का जरिये कविता के रूप देला । कवना भाषा आ ओकरा काव्य-रूपन के एगो परंपरा होला । भोजपुरी लोक में 'गीत' सर्वाधिक प्रचलित आ पुरान काव्य-रूप हऽ ।

जेतरे हर काव्य-रूप (फार्म) के आपन-आपन रचना-विधान, सीमा आ अनुशासन होला, 'गीतो' के बा । दरअसल गीत एगो भाव भरल सांकेतिक काव्य-रूप हऽ, जवना में लय, गेयता आ संगीतात्मकता कलात्मक रूप में रहेला । शब्द-अरथ के सुघर बिनावट का साथ-साथ आंतरिक संगति के एकरा में बहुत महत्व बा । केहू पुरान साँचा में नया ढंग से भावाभिव्युक्ति का परंपरा के आगा बढ़ावेला, केहू पुराना साँचा-ढाँचा में कुछ नया मिलाइ के अपना समय-सत्य के उकेरेला आ केहू पुराना साँचा तूरि के नया साँचा-ढाँचा गढ़ेला । महत्व तीनों के बा, काहें कि तीनू में अपना समय के जीवन आ परिवेश रहेला ।

गीत का संरचना में भाषा के सार्थक, सुनियोजित इस्तेमाल गीत के सार्थक 'इम्प्रेशन' देला आ ओकरा के असरदार बनावेला । गहिर असर डाले वाला गीतन में वास्तविक जीवन के भाव-सघनता, तरलता, आ अनुभूति के गहिर व्यंजना रहेले । कवनो गीत के 'टोन,' लय आ ध्वन्यात्मक अनुगूँज ओकरा संप्रेषणीयता के अउर बढ़ावेला । लोकगीतन का अनगढ़ संरचना में, मर्म छूवे आ झकझोरे वाला शक्ति एही कारन बा । गीत के एगो लमहर परंपरा भोजपुरी लोक-साहित्य में बा, जवन अधिकतर वाचिक बा । एम्में लोकजीवन के हूक-हुलास, राग-रंग आ आँच देबे वाला साँच का साथ प्रेम-विरह के मार्मिक व्यंजना बा । पुरुषप्रधान गीत बिरहा, चइता, फगुवा, कहरवा आ नारीप्रधान कजरी, सोहर, झूमर, संझा-पराती, जेवनार, जँतसार, छठ, बहुरा आ बियाह के गीतन में श्रम, सपना, हुलास, हँसल-अगराइल, पीरा आ अहक-डहक; सुनवइया के बरबस खींचे आ बान्हे के सामर्थ से संपन्न बा । इहे ना, देवी-देवतन के मनावन-रिझावन आ आत्मनिवेदन कूल्हि बा एमे । लोककंठ से फूटल, दूर ले, बिना प्रचार-प्रसार के सहजे पसरल भोजपुरी के ई गीति-परंपरा कतने नया साँचा गढ़लस ।

प्रेमरस से भींजल, विरह के पीर से भरल कसक उपजावे वाला भाव प्रधान निरगुनिया गीतन के सिरजनहार महेन्दर मिसिर एगो नए राग आ गीत-रूप दिहले–'पुरबी' । एह गीतन के भावावेग आ लय में भाषा के सीमा टूटि जाले । ध्यान से देखल जाव त ई बात साफ हो जाई कि एह गीतन में शब्दन के चुनाव आ बइठाव में कुशल संयोजन बा । लोक-संपृक्ति आ संप्रेषण खातिर कमोबेश एह तरह के शब्दन के इस्तेमाल करहीं के परेला, जवन लोक-व्यवहार में आपन अर्थ गौरव आ आकर्षण राखत बाड़न स । एकरा साथे-साथ भाव-संप्रेषण का अनुकूल एह तरह के लय-विधान बनावे के परेला जवना से भाव-सघनता आ अनुभूति के तरलता असरदार ढंग से सुनवाला के हृदय के छू लेव ।

भोजपुरी के कवि जब गीत लिखे लगलन त लोक प्रवाहित ई गीत-परंपरा कवनो ना कवनो रूप में ओ लोगन के पाछ भइले रहे । भोजपुरी गीतकारन में दोसरा भाषा लेखा कबो नया-पुरान के ताल-ठोंक झगरा ना भइल । अब्बो नइखे । एकर कारन ईहे बा कि ई कवि अपना माटी आ परंपरा से हमेशा जुड़ल बन्हाइल रहलन स । शिल्प-संरचना बदलल, भाषा प्रयोग के तौर-तरीका बदलल, बाकि गँवई भावधारा नया-नया रूप धइ के संगे लागल रहि गइल । अपना जमीन से कटि के दुनियाँ-जहान का भवँरजाल में अझुरइला से का होइत ? भोजपुरी लोक ओके सकरबे ना करित ।

भोजपुरी कवि जबना उछाह से लोक राग आ ओकर पारंपरिक लय-धुन पकड़ि के आपन गीत रचेला, ओही उछाह से एह काव्य-रूप केहू नया शिल्प-साँचा में अपना माटी के रस-गंध आ सुभावो उरेहेला । लीखि से अलगा हटि के लिखे वाला कवियन में जहाँ परंपरा से विलगाव भइलो बा, उहाँ ओकर भोजपुरिहा-संस्कार ओके भोजपुरी परंपरा से कटे नइखे देले; जे एहू से कटि गइल, समझ लीं ऊ भोजपुरी के नइखे रहि गइल । बाहर ओकर भले जान-मान भइल, भोजपुरी में ओकर पुछार ना भइल ।

स्वतंत्रता-आंदोलन आ सुराज मिलला का बाद ले भोजपुरी कविता क जवन रूप देखे-सुने आ पढ़े के मिलेला ओमे राष्ट्रीय चेतना का अलावा प्रकृति के सुघराई, खेत-खरिहान, मौसम, प्रेम-भावना, जिनिगी के दुख-सुख आ भक्ति के स्वर प्रधान बा । गौर कइला प ई साफ बुझाई कि गँवई जीवन आ प्रकृति एह पूरा कविता-समय के आलंब आ प्रतिपद्य रहल बा । लोक-गीत लोक अनुभूति आ ओकरा रुचि-प्रतीति के गीत-संसार हऽ । सुख-दुख, सोच-बिचार, अनुभव-व्यवहार हर ममिला में लोक-धर्मी । किसान-मजूर आ मेहरारू एह संसार के वाहक आ भोक्ता हउवन त घर-गिरहस्थी, खेत, खरिहान, बाग-बगइचा, पोखरा-ताल-नदी आ पहाड़-जंगल एकर क्षेत्र हउवे । एकरा बाद कुछ बा त ऊ परदेस हऽ । बाकिर ई क्षेत्र अब बढ़ि-पसरि के प्रदेश, देश, देश के राजनीति, शासन-प्रशासन, सड़क-संसद, सामाजिक-सांस्कृतिक विघटन, मानवी-रिश्ता आ मूल्यन के बिखराव तक पहुँच गइल बा । एह तरह से ई अपना लोक दृष्टि में आधुनिकता आ उत्तर आधुनिकता के काम भर समेट चुकल बा ।

भोजपुरी कवि नकली क्रांतिधर्मिता आ जन-पक्षधरता के भोंपू ना बजावे; ऊ जन-चेतना के वहन करेला । जरूरन जथारथ बा ऊ बा, आ जथारथ ई बा कि दिन-रात, हाड़तोड़ काम कइला का बाद जो दू घरी कहीं ओठँघे-बइठे आ सपना बुन के संजोग भेंटाला त ओहू कल्पना-विहार का अवस्था में ओकर गरीबी कवनो ना कवनो रूप में झलकेले-चाहे ऊ पेवन आ चकतिये लेखा काहें ना होखो । ऊ धरती-अकास का बीच घटे वाला हर घटना-दुर्घटना के अपना देंहि आ दिल-दिमाग पर अनुभव करेला । ई बात दीगर बा कि ओकर धरती गँवई खेत-खरिहान क धरती ह, आ ओकर दुनिया एह, धरती पर नया-नया रूप धारे वाली प्रकृति के दुनियाँ हऽ–

चन्दा ओढ़वे राति चानी के चदरा
सूरुज उड़ावेला सोने के बदरा
बदरे में चकती लगावे मोरी नइया !

मजे-मजे काम होखे रसे-रसे पानी
ताले-तलइया में बिटुरल बा पानी
सोने क मछरी कि रूपे क रानी
पियरी पहिरि बेंग बइठेले ज्ञानी
इनरासन झूठ करे हमरी मड़इया !
सननन, सन सन बहेले पुरवइया !!

० मोती बी. ए.

मोती बी. ए. अपना काव्य-संग्रह 'समर के फूल' में फोंड़, फूल, सुगना आ झुलनी जइसन प्रतीकन से जीवन-दर्शन के अन्योक्तिपरक प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति त कइलहीं बाड़न, खेती-बारी आ किसान-जीवन के यथार्थ चित्रो उरेहले बाड़न । एम्मे कल्पना के हवाई उड़ान आ रुमानी छिछिलपन नइखे-एगो जियतार चटक रंग बा, जवन अपना लालित्य आ रागात्मकता से लसल बा । मोती बी. ए. गँवई जीवन के कुशल चितेरा बाड़न । एही से उनका गीतन में प्रकृति के सुघराई का साथ-साथ किसान के संघर्ष, दुख-दरिद्रता आ अवसाद के मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति भइल बा-

पुसवा आ मघवा बिपतिया के खनिया
एही में होले वसूली लगनिया
साहब के कुड़की सभापति के घुड़की
ढेबुआ की खातिर उजारें पलनियाँ
हाकिम-दइब हतियार हो सजनी !

० मोती बी. ए.

ई अनायास नइखे कि प्रकृति के प्रति भोजपुरी कवियन के गहिर लगाव गीतन में चित्रित भइल बा । हिन्दी के काव्य-धारा में आइल बदलाव, भोजपुरियो के प्रभावित कइले बा । अनिरूद्ध, हरेन्द्रदेव नारायण, भोलानाथ गहमरी, प्रशान्त आदि कुल्हि कवियन पर छायावादी संस्कार आ प्रवृत्ति फलकेले । बाकिर शब्द-संयोजन, भाषा क चित्रकारी, प्रेम भावना आ रहस्यवादी प्रवृत्ति का बावजूद गीत में एगो खास किसिम के लोकज संवेदना, लगाव आ सह-अनुभूतियो मिली -

टुटही मड़इया के अइसन कहानी
अदहन का पानी में खउले जवानी
रोवेला छौंड़ा मजुरवा, मेहरिया
देखे बजरिया के राह
साँझिया के उसरल बजा...

० अनिरुद्ध

बिना छुवल बाजेला सितार !
पतझर में दरद, माघो में पिरीत गीत
बरखा में गाईले मल्हार !

० हरेन्द्रदेव नारायण

सजधज के सोनकिरिन उतरे मुड़ेरिया
ओठ पर धरे केहू गुलाब के पँखुरिया
टाँकि गइल सात रंग बिंदिया लिलार के ।

० भोलानाथ गहमरी

भोलानाथ गहमरी के गीत-संसार प्रकृति आ प्रेमपूरल जीवन के सुघराई आ मनोहरी प्रतीति के संसार हऽ । लय, गेयता, संगीत, रागबोध से भरल उनका गीतन में लोकज संवेदन का कारण एगो चटक क्षेत्रीय रंग आ अपनापन आ गइल बा । 'बयार पुरवइया', 'अँजुरी भर मोती' आ 'लोक रागिनी' में घर अँगना, खेत-खरिहान का साथ-साथ प्रेम के लौकिक आ अलौकिक दूनो रूप देखे के मिली। जहाँ उनकर गीत छायावादी, रहस्यवादी प्रेम भावना के छोड़ि के लोकज रूप धइले बा, ओम्मे दोसरे आकर्षण आ गइल बा –

महुवा के फूल झरे पलकन के छँहियाँ
सारी रात महके बलमु तोरी नेहियाँ !
कीचड़ से नीलकवल दियना से कजरा
चिटुकी भर नेह से सँवर जाला जियरा !

• भोलानाथ गहमरी

छायावादी रहस्यलोक आ 'बलमुआ', 'पियवा' का संसार से बाहर निकल के जहाँ भोजपुरी गीत देश, समाज, खेत-बथार आ बेवस्था के आपन विषय बनवले बा, उहाँ ओकर भाव-भूमि लोकज हो गइल बा । एही से एह गीतन में आर्त्त आ त्रस्त जन के सुख-दुख, आस-निरास, पीरा आ आक्रोश मुखरित भइल बा । एह गीतन में भोजपुरी के साहित्यिक बाकि प्रकृत रूप प्रगट भइल बा । सुराज का बाद आमजन के स्थिति भोजपुरी गीतन में कुछ एह तरह से प्रकट भइल कि ओ से गहिर निराशा आ अवसाद के झलक साफ लउके लागल–

हमनी का आह से जे धुआँ उठी ओकरा से
लोक काँपि जइहें सरग भरि जइहें
गाँव-गाँव मड़इन से आगि उठी लपलप
देखत-देखत में महल जरि जइहें ।

• राम विचार पाण्डेय

बटिया निरेखत नयन पथराइल
हमरी दुअरिया सुरजवा ना आइल
कवनी नगरिया रे रहिया घेराइल
बापू के सपना के टूटल गुमान !

टूटि गइल थून्ही कोरो, ढहली मड़इया
फाटल करेजा पर लगान के चढ़इया
मनवाँ में पीरा बा नयनवाँ में लोर बा
केने बा समाजवाद जेकर भइल सोर बा !

• जगदीश ओझा 'सुन्दर' (जुलुम भइले राम)

जगदीश ओझा 'सुन्दर' अपना गीत-संसार में गँवई समाज का साथ-साथ पूरा देश के आंतरिक दुर्व्यवस्था के चिन्दी-चिन्दी उघार देत बाड़न । 'जुलुम भइले राम' कविता-संग्रह में अइसन कई गो मार्मिक आ मन के झकझोरे वाला गीत बाड़न स, जवना में जथारथ के खाली जस के तस नइखे परोसल गइल, बलुक ओकरा तह में घुसि के असलियत के उघारे के कोसिस कइल गइल बा । नोंचात-चोंथात आ चूसल जात आम आदमी एह गीतकार के अइसन हड्डी अस लागत बा जेके जुल्मी आ शोषक कुक्कुर लपटि के नोचे में लागल बाड़न–

केहू माँगे घूस केहू माग नजराना
केहू माँगे सूद मूरि, केहू मेहनताना
कुकुर भइले जुल्मी जन, हाड़ भइल जिनिगी
नदी भइल नैना, पहाड़ भइल जिनिगी !

◘ जगदीश ओझा 'सुन्दर'

एम्में शक नइखे कि एह दौर के गीतकारन के सर्वाधिक प्रिय विषय प्रकृति रहल बिया । गँवई परिवेश में प्रकृति के करीबी दर्शन अपना आप में सुन्दर आ ललित बा, बाकि अपना संवेदना आ अनुभूति के लोक व्यवहार आ अनुभव से जोरि के ओकर प्रभावपूर्ण प्रस्तुति कइल कठिन बा । भोजपुरी गीतन में ई प्रभावान्विति, एगो खास किसिम के चमक का साथ उभरल बा–

ललकी थरियवा में दियना के जोति लेके
उतरल आवेला बिहान !

सनन सनन जब बहेले बेयरिया
टटिया के ओटवो उड़ावेले चुनरिया
काँपि जाले पतई से पाटल पलान रे
बदरा के देखि-देखि बिहरेला प्रान रे

◘ प्रभनाथ मिश्र (हरियर-हरियर खेत में)

रितु-अनरितु में कवन बिधि तुलिहें
गरमी के दिन में गुलाब कइसे फुलिहें
संग-संग सनके लागी तपति बयार हो....कवन बन गइलें?

◘ राम जियावन दास 'बावला' (गीतलोक)

कारिख का कोखी से लाल किरिनि के जनम कहाई
धुरियाइल धरती का आँचर में मोती बिटुराई
दमकी हीरा दिन दुपहरिया सरग-पताल सिहाई
जीतत चली जिनिगिया रन, मन मउवति के मुरुछाई

◘ अविनाश चंद्र विधार्थी ('सुदिन')

निमिया के गछिया से फूस के मड़इया पर
उतरेला सोना अस भोर

◘ रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

फजीर के अँजोर के प्रतीकात्मक ढंग से चित्रित करे के परंपरा भोजपुरी गीतन में सुरुवे से बा । भोजपुरी गीतकारन के अभिजात नागर जीवन के बनावटी दुनिया संवेदना आ रस से हीन जिनिगी में कवनो रुचि नइखे । ऊ जवन देखत सुनत अनुभव करत बा ऊ दुनियाँ खेत-बारी, नदी, पहाड़ के दुनियाँ हऽ । ऋतु परिवर्तन का साथ सजे-सँवरे, जरे-झउँसे वाली प्रकृति से ओकर अटूट रिश्ता बा । बोवाई, रोपनी, सोहनी आ कटिया-दँवरी में लागल खेतिहर मजूरन के उछाह, उमंग, चिन्ता-फिकिर आ पीड़ा के ई कवि अपना हिया का आँखि से देखत बाड़न स। कभी-कभी आधुनिकता का चकाचौंध में मजा लूट रहल लोगन के देखि के ओकरा भीतर खीझि आ असंतोषो उभर जाला, बाकि आखिरस फेरु ओही गँवई संसार का कारुणिक नियति के साक्षात्कार कइल जइसे ओकर मजबूरी बा–

कुहुँकत-कहुँकत बीति गइले जुगवा
गरजि-गरजि अब गाउ रे कोइलिया !

◘ प्रभुनाथ मिश्र

सटल पीठ से पेट जहाँ पर
जहाँ भूख से उठल करुन स्वर
दाल भात पर नजर परल बा
दूलम सतुआ साग कोइलिया,
ई गरीब के बाग कोइलिया !

◘ डॉ. रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

जनजीवन के दुर्दशा आ दुख के चित्रण करत खा भोजपुरी कवि ओकरा उल्लास, उमंग, उछाह आ सुघराई के नजरअंदाज नइखे करत, काहें कि ओकरा जथारथ में ईहो बा । जवानी, प्रेम आ हुलास परिस्थिति का मुताबिक अपना बिरोधी स्थिति आ बिसंगति का साथ उजागर होत बा । भोजपुरी के ई गीतकार जनवादियन लेखा खाली भूख आ रोटी आ कल्पित क्रांतिधर्मिता के अपना गीत में नइखन स थोपत, इहाँ त सुघराई अपना तिताई का साथ सोझा आवत बा, प्रेम, बिरह, गरीबी आ दुख के अभिव्यक्त करे में प्रकृति ओकर आलंबन-उद्दीपन बनत बिया–

जड़वा के रतिया, गरीबवन के छतिया
पछुवा बहेला बिछीमार !

अँगिया में धधकत बा अगिया गरिबिया के
अँखिया में छलकत बा लोर !

चुपके चोर चोरा ले भागल सरबस माल जवानी
टूटल नीन, नेह के घइला फूटल, ढरकल पानी ।

दिन भर उड़ेला मैना / थाकि जाला दूनो डैना
दुनियाँ छिपल बाटे जलवा पसार के !
घरवा में घूमे गोरी सँझवत बार के !

◘ रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

रागात्मक अनुभूति के कोमल व्यंजना आ कल्पनाप्रवण भावुकता भोजपुरी के अधिकांश कवियन में रहल बा । कहीं ई बौद्धिक चेतना आ ज्ञानात्मक संवेदना से लसि के उभरल बा, कहीं निछक्का रागात्मक आ संवेदनात्मक रूप में । सदर्भ-चित्र, भाव-चित्र आ रूप-चित्रन से सजल एह गीतन में गीतकार के आत्मानुभूति, गहिर भावबोध आ अभिव्यक्ति-कौशल देखे लायक बा । भोजपुरी काव्य भाषा के साहित्यिक रूप एह तरह के गीतन में अउर निखरि गइल बा–

बाहर के सांकल के पुरवाई झुन से बजा गइल
आँगन के हरसिंगार दुअरा के महुवा जस
च-चू के माटी पर अल्पना सजा गइल !

◘ पाण्डेय कपिल (भोर हो गइल)

मधुवन झउँसि गइल फुलवन के
झाँवर भइल सुरतिया
कुंअना गइल पताल, ताल-तलइन के दरकल छतिया
सिकुरि-सिकुरि अझुराइल नदिया गतरे गतर सेवार के ।
पानी उतरल धार के !

◘ जगन्नाथ (पाँख सतरंगी)

इन्द्रधनुष में सात रंग कूँची से भरे चितेरा
जाल डाल सागर में डोरी खींचे चतुर मछेरा
के वंशी के सुर फूँकेला भौंरन के गुंजार में !

० गणेश दत्त 'किरण' (अंजुरी भर गीत)

गोरकी बिटियवा टिकुली लगा के
पुरुब किरनवा तलैया नहा के
चितवन से अपना जादू जगा के
ललकी चुनरिया के अँचरा उड़ाके
ननिक लजा के आ हँस-खिलखिला के
नूपुर बजावत किरिनिया क निकलल !

० रामेश्वर सिंह 'काश्यप'

लोकधर्मी भावभूमि पर, लोकराग में ठेठ लोकज ढंग से रचाइल-बिनाइल गीतन के त बाते कुछ अउर बा । एम्मे भोजपुरी के आपन संस्कार आ पहिचान झलकत बा । भाषा के सुभाव का लेहाज से ई गीत जइसे बेमेहनत के सहजे बहरिया गइल बाड़न स । एह गीतन में ठेठ शब्दन के सार्थक प्रयोग अउर असर डालत बा–

छनियाँ पर लतरल बा झिंगुनी तरोइया
दुअरा बरधिया के जोर
अठिया बँड़ेरिया गुटुरगूँ परेउवा
बचवा भइल अँखफोर ।

० बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव

भरल घइलवा सनेहिया के ढरकल
दूधे नहाइल नगरिया
बीचे बजरिया में छवि के हेराइल
रस में गोताइल नजरिया
झूम उठल मस्ती में गँवई सिवान रे ।
उतरल तलइया में गोर-गोर चान रे !!

० जगन्नाथ (पांख सतरंगी)

जड़वा के खेतवा पर चढ़लि जवनियाँ
गेहुवाँ पर बरसल सोनवाँ के पनियाँ
बुटवा में तिसिया धधाइल रे
आइल बसंतरितु आइल रे !

० राहगीर (भोजपुरी के गीतकार)

नइहर मोर जइसे जलभर बदरा
मोरे ससुरे ओइसे लहरे सिवान हो !
अपनै आपन करीं केतना बखान हो
सासु मोरि धरती ससुर असमान हो !

० हरिराम द्विवेदी (नदियो गइल दुबराय)

अँगना में तुलसी के बिरवा परल घवाइल बा
पुरवा का लहरा में कइसन दरद समाइल बा
अमरइया के छाँह ठाढ़ हो गइल काढ़ के फन !
कहाँ निरेखीं आपन सूरत, दरक गइल दरपन ।

० भगवती प्रसाद द्विवेदी

जगमग जरेले किरिनिया के बाती / अँगना में आवेला अँजोर !

चनिया के चदरा चनरमा बिछावे
जोन्हिया के अँग-अँग गहना गुहावे
गोरकी के बढ़ि जाले आजु बड़कई
बुलुक बुलुक बुलुकावेले करियई
अँखिया से आवेले अँसुइया के धरिया
ओसिया ओही क हवे लोर !

◘ मुख्तार सिंह 'दीक्षित'

गोबरा से लीपल अँगनवा निहारे
ए राजा, अबकी कमइया मुआर
फाटत करेजवा के सबुर धरइहऽ
ए रानी हमनी के हईं बनिहार !

◘ मधुकर सिंह

शिल्प आ भाषा के बिनावट का दिसाई सतके गीतकारन में परंपरा से कुछ अलगा हटि के प्रयोगधर्मिता आ नया अभिव्यक्ति देबे क छटपटाहट लउकत बा। हिन्दी में आइल नवगीत के नवधारा के प्रभाव का कारन ई गीतकार अपना रचना में बिम्ब, प्रतीक आ संकेत का जरिये गीत में नया रंग भरे के उतजोग कइले बाड़न। हिन्दी में ई काम कहीं शहरी शब्द-संजोजन से आ कहीं, लोकज शब्द आ मुहावरन का प्रयोग से संभव भइल, बाकि भोजपुरी में गाँव, प्रकृति आ जन जीवन का भाव-भंगिया के नया लय, नया शब्द-योजना, प्रतीक आ रूप-चित्र का साथे परोसला का कारण एह गीतन में अभिव्यक्ति के एगो नये सुघराई प्रगट भइल–

ललकी किरिनिया के डेंगिया में बइठल
जुड़वा खोलत मुसुकाय
जुड़वा तोपाइल दहकत देहियाँ
अगिया पियत भहराय,
साँसिया के बहे जे बयार
सखि रे धरती के भरे अँकवार !

◘ उमाकांत वर्मा (गीत जे गूँजल)

पुरुब छितिज पर / फूल भोर के खिले
गगन उजराये
फूल साँझ के जूड़ा में खिले
बने इंजोरिया, गाये.....
किरिन पाँख में ले लपेट
चिरई फुनगी पर जाये !

◘ विश्वरंजन ('एक पर एक')

पोंछ गइल आँतर के / गढ़ुवाइल बात
सिकहर पर झूल रहल / बसियाइल रात
झाँक रहल गीतन के रागिनी अरूप !
छितराइल सुधियन के एक पसर धूप !

◘ पी० चंद्रविनोद (केतना बेर)

किलकारी नदियन के
गोद में पहाड़ी के
थथमल बा रूप के हिरन !

आँगन में पसरेला अँजुरी भर धूप
मरुआइल चंद्रमुखी/मरुवाइल रूप-सूरज पर पहरा परे
फूल हरसिंगार के/ मन का चउतरा पर
चुपे चुपे रात भर झरे !

◘ परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी'

गाँव होखे या कस्बा आ शहर-ओकर विसंगतिपरक आ अभावपूरित अमानवीय माहौल साधारण आदमी के दुख, परेशानी आ चिन्ता के अउर बढ़ा दे ले बा । गाँव अब पहिले वाला गाँव नइखे । ओकर भोलापन, सोझबकई, आपुसी भाईचारा धीरेधीरे बिला रहल बा । प्रकृति आ ओकरा सुभाव से रँगल पुरनकी रागात्मक संवेदना आ ओसे जोराइल अपनापा, शहरी कुप्रभाव आ राजनीतिक छल-छहंतर का आँच से झुलस रहल बा । अइसना में भोजपुरी गीत के 'थोम' लय आ उद्देश्य काहें ना बदलित । ओकरो पर ओइसहीं प्रभाव परल–

तरकुल के छाँह भइल जिनिगी !
रेत भइल नदी के कहानी
डभकत बा दिन जइसे अदहन के पानी
चूल्हा के धाह भइल जिनिगी !

◘ सत्यनारायण ('काव्या' 93)

जिनिगी का बखरा में घाव के अगोरिया
कबहूँ अन्हार घेरे कबहूँ अँजोरिया
राति राति जोगवल कुँवार
सपनवाँ दुअरिये तँवाला !

◘ रिपुसूदन श्रीवास्तव ('काव्या', 93)

महँगी के बहँगी पर देह के सुखौता
बेकल जवानी पर जीभि के सरौता
हाथ का तिजोरी में, दउरत पसेना के
पेट में बा लंका-दहन !

◘ परमेश्वर दूबे शाहाबादी (उरेह-5/6)

सपना के होला जहाँ होलिका-दहनवा
मनवाँ में खउलेला प्रीति अदहनवा
मयगर ऊ अँचरा के छाँव कहाँ रे,
दउर-दउर खोजीला गाँव कहाँ रे ?

◘ कुमार विरल ('पाती'-6)

मन मिरगा भटक रहल लूह चले ताल में सपनन के पाँख फँसल
कवन महाजाल में सोझहीं धनकत बाटे पुलुई जजात के !

◘ अशोक द्विवेदी (पाती-6)

देवता घुमत बा उघार खोरी-खोरी
गोड़ तर फाटेला दरार चारू ओरी

मुठ्ठी भर बीया के हो गइल तबाही
आसा के खेती में लागलि बा लाही
आँखी मे आँसू ना गिरल करे ठार !

◘ आनंद 'सर्वेद्त' (एक कड़ी गीत के)

भोजपुरी कविता जेतर अपना ठेठ शब्द संस्कार आ मुहावरेदारी का संग भोजपुरी के भाषिक तेवर; नाटकीयता आ सांकेतिकता के इस्तेमाल से, अपना प्रयोगधर्मिता के सँवरले बिया; ओके देखि-समुझि के सुखद अचरज होई, खास कर गीत-संरचना देखि के- ओकरा बिनावट से निसरत अर्थ गांभीर्य आ व्यंजना देखि के । दुख आ पीड़ा के ओकरा कारन आ परिवेशगत बिसंगति का साथे उकेरे में भोजपुरी के गीतकार सफल रहल बाड़न । लोकधुन के काव्य रूप होखे आ नया संरचना-शिल्प के, गीत रचत खा भोजपुरी गीतकार के काव्यानुभूति जमीनी जथारथ आ लोकमुहावरन से अपना के संपृक्त क के आपन आकार ग्रहण करेले ।

अपना भागे कुदिन तबाही
जलन घुटन ठहराव
ठंढा सूरज धनकत गाँव !

◘ गंगा प्रसाद अरुण (पाती-22)

कोख के करेज कहीं कुहुँके पलुहारी पर
धनियाँ के ध्यान जाके अटकल बनिहारी पर
अजबे ई मनवा परल पसोपेस में !

◘ दक्ष निरंजन शंभु ('एक पर एक')

जाड़ा गरमी बरखा न जनलीं / गोहूँ ओसवलीं त भूसा बनलीं
काहें बरध सब खेतवा चरलें / हम भइलीं कउड़ी के तीन
केकरे नाँवे जमीन पटवारी / केकरे नाँवे जमीन !

◘ गोरख पाण्डेय (भोजपुरी के नौ गीत-7)

समय बहेंगवा बेलगाम / मोर फाटल फाँड़ न बूझे
एह अन्हार जंगल में कवनो / ऊजर राह न सूझे
चिरई केतनो आस जोगावे बाकिर
रोजे जाल फँसे !

◘ अशोक द्विवेदी ('पाती')

छोट-मोट आदमी के नियति बा कि ऊ जवन आस-बिश्वास आ भरोस लेके आपन जांगर तूरेला, बेवस्था का बिरोधाभासी घटाटोप में, घेरा के जहाँ के तहाँ पहुँच जाला, कबो-कबो त ओकर कुल्हि सपना जथारथ का चकाचउँध से छिन्न-भिन्न हो जाला । एह कारुणिक स्थिति के भोजपुरी गीतकार अलग-अलग कोण से देखे आ देखावे के कोसिस कइले बा लोग । अपना जमीन आ परंपरा से अंदरूनी रिश्ता बना के कुछ कहे का प्रक्रिया में जदि प्रयोगधर्मिता आइलो बा तबो गीत के कड़ी टूटल नइखे । सजग कलात्मक रचाव का कारन ई गीत अउर अर्थगर्भ आ असरदार हो गइल बाड़न स । गीत में जहाँ कहीं नाटकीयता आ कटाक्षपूर्ण व्यंग्य व्यंजित भइल बा, उहाँ ई असर कुछ अउरी बढ़ जाता-

धीरे-धीरे शहर गाँव में, देखा कइसन धँसे लगल हौ
सास के मुँह पर नई बहुरिया उलटे पल्ला हँसे लगल हौ !

◘ कैलाश गौतम (पाती-22-23)

लोकतंत्र अबरा के मेहर
ई मेहर सबकर भउजाई
सुनि लऽ भाई ।

◘ सत्यनारायण ('कविता'-4)

काम बाटे कतना ले बीने के बरावे के
रतिया बिछावे के अँजोरिया सुखावे के
हाँके के बा तरई उड़ावे के बा चान
हमें सोचहूँ न देत बाटे पेट के पहाड़ !

◘ आनंद संधिदूत (पाती-6)

घर लूटे क साजिश होत बा दुआरे
मुखिया चुपचाप कहीं बइठल पिछुवारे
अँगना क लोग भइल काठ क गिलहरी !

◘ कमलेश राय (पाती-22)

उपवन-उपवन बगिया-बगिया
नाच-नाच गावे कागा
कोइल नजर बचा के भागल
ना केहू पीछा आगा
गरम हवा के गश्त तेज बा / अमराई के छाँव तले !

◘ सूर्यदेव पाठक 'पराग' (कविता-6)

भोजपुरी गीत के अपना-अपना भावभूमि, प्रतिभा, दृष्टि आ रचना-कौशल से नया-नया भँगिया आ ऊँचाई देबे में कतने पुराने आ नया गीतकार लागल बाड़न ओह सब लोगन के एह छोट आलेख में समेटल कठिन बा । गीत के भाव-भँगिमा बनावे में जुटल एह लोगन में नगेन्द्र भट्ट, माहेश्वर तिवारी, पाण्डेय आशुतोष, ब्रजभूषण मिश्र, प्रकाश उदय, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष', रिपुंजय निशान्त, सुभद्रा वीरेन्द्र, दयाशंकर तिवारी, शम्भुनाथ उपाध्याय, हरिवंश पाठक गुमनाम आदि के नाँव लिहल जा सकेला । भोजपुरी के पत्र-पत्रिका खास कर 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', 'पाती', 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आ 'कविता' स्तरीय ढंग के गीत प्रकाशित कर रहल बाड़ी सन । भोजपुरी गीतकारन के नजर अब आज के जिनिगी के जद्दोजहद, संघर्ष, विचार-दर्शन आ ओह अमानवी स्थितियो पर जा रहल बा, जेमे आदमी के जुझला-जोतइला आ आत्मसंघर्ष का संगे-संगे ओकर असहाय अवस्था, किंकर्त्तव्यविमूढ़ता आ संवेदनहीन मन: स्थिति आ जा रहल बा । अरसा से भोजपुरी कविता के सजावे-सँवारे में लागल समर्थ गीतकार एहू खातिर चिन्तित लउकत बाड़न कि अत्यधिक आधुनिकता के मोह, प्रयोगशीलता आ चमत्कार-सृजन का चक्कर में भोजपुरी संस्कृति आ भाषाई-खासियत मत छूट जाव ; जन-जन का कंठ से प्रवाहित– सुनवइया के आंदोलित करे वाला ऊ राग-रागिनी, धुन आ लय मत तिरोहित हो जाव, जवना खातिर भोजपुरी जानल-पहिचानल जाले ।

गीत गाँव के

अनिरुद्ध

भोर किरिनिया रँगे नजरिया, मनवा रँगलऽ प्यार !
प्रान चोरवले उड़े चिड़इया थाके नयन निहार !!

शोर भइल बा गाँवे गाँव,
आ रे बैला ठाँवे आव !
भोर किरिनिया रँगे.....!

पुरुब सुरुज टिकुला, भुँइ दरपन, ताल गगन मुख निरखे,
दुनिया दिशि-दिशि चमके पच्छिम, उत्तर-दक्खिन चमके,
घाट-बाट जिनगी अँजोर मन, अइसन सजल सिंगार !!
भोर किरिनिया रँगे.....!

रवि टीका, टिकुली मग झलके, सजल बिआ सिर दउरी,
धरि अँचरा खींचे ठुनकत ऊ धन गोरी के छँउरी,
हल-संसार चले कान्हे ले, छँवरा कान्ह कुदार !
पालो बैलन कान्ह घुँघुर गर, भरे डगर झनकार !!
भोर किरिनिया रँगे.....!

छम-छम नाचे किरन बिहनिया, गछिया झहरे सोना,
गोरिया उछिटे घास खेत के, छँवरा कोड़े कोना,
अरिया छाँटे दूब बढ़ल, रस चूसल रहे चिन्हार !!
भोर किरिनिया रँगे.....!

मेहनत के रोटी झलके दिन, आसमान के ऐना,
पैना उड़े हवा में नाचे, झटके धवरा-मैना,
धारी में धनिया धरिआवे, बोये रतन अपार !!
भोर किरिनिया रँगे.....!

आरी-पारी झुनिया, रमुआ, बीच खड़ा बनवारी
हेंगा नाव बैल गुन खींचे, चले बरफ के गाड़ी
धोबिया लोहा करे चदरिया, देवे खेत सँवार !!

भोर किरिनिया रँगे.....!
शोर भइल बा गाँवे-गाँव, आ रे बैला ठाँवे आव !

दूगो गीत

✍ डॉ॰ अशोक द्विवेदी

(एक)

अँगना बँड़ेरिया प
कगवो ना उचरे
पिया तोर मिठकी नजरिया न बिसरे ।

डाढ़ि-डाढ़ि फुदुकेले
रुखी अस दिन भर
मन के चएन नाहीं
देले कबों छिन भर

सुधिया तोहार मोरा हियरा के कुतरे !
पिया तोर मिठकी नजरिया न बिसरे !!

झूठेमूठ हँसे के बा
आवे जो रोवाई
कबो सलतंत से ना
आवेले ओंघाई

सीति ढोवे पछुवा, बदन मारा कुल्हुरे !
पिया तोर मिठकी नजरिया न बिसरे !!

भितरा से कले-कले
फूटे जब पचखी
जोहीं हम चारू ओरि
ऊहे दीठि-कनखी

कइसे अकेल उहाँ, तोहरा से सँपरे ?
पिया तोर मिठकी नजरिया न बिसरे !!

(दू)

जोर-जुलुम दुनियाँ के
घाव-दरद सहलीं
कालकूट जिनिगी के पीके
चुप रहलीं !

मुँह में अँगुरी देके लोगवे बोलवावल
अपने मन से आपन फैसलो सुनावल
झूठ-मूठ हम कवनो रार ना बेसहलीं !

दहब के न दोस रहे, ना हमरा भाग के
दरद रहे अपनन के दागल कुछ दाग के
ना कइलीं हम किछऊ, बस धरम निबहलीं !

घात में रहे सब अपना-अपना दाँव के
नेह रहे झूठमूठ बस खाली नाँव के
मरम बूझि गइलीं हम, तबो कुछ न कहलीं !

जौन रहे करतब, जिउ जाँगर भरपूर भइल
न्याय का भरोसा में तन थक के चूर भइल
जेतना भर रहे जरूरत ओतने चहलीं !

बाहर-भीतर कोना अँतरा ले झारि के
एक ठईं कइलीं कतवार कूल्हि टारि के
सँझलौके आग लेसि ताप-तूप लिहलीं !

बरिजल सब 'मत कूदऽ तूँ एह मझधार में
आँख नाक कान कूल्हि मूनिलऽ अन्हार में',
धार के खिलाफ तबो धार बन त बहलीं !

कालकूट जिनिगी के पीके चुप रहलीं !

आनन्द सन्धिदूत के दूगो गीत

एक

कतना चमकल कतना कड़कल
तबो न बरिसल मन
धुआँ-धुआँ ओरहन छितराइल
उड़ल सघन अनबन !

कतना टेक-प्रतिज्ञा-किरिया
नवरस रूसल जीव
बात-बात का पोर-पोर में
टभकत भूत अतीव
जबदल जिद्द टेक में बान्हल
थाह-थाह भर आरु
अमृत भइल जहर, जे घोरल
शहद बराबर घीव

अइसन कठिन ब्यूह भिहिलाइल
चीन्हत आखर एक
बिन बादर बरसात, जुड़ाइल
मन के बिरह-खखन
धुआँ-धुआँ ओरहन.....!

ई जग जइसे गदर-काफिला
पीठ लदल अफरात
भाव शून्य चेहरा मारत
पीछे वालन के लात

खात-खिआवत लात शृंखला
जीवन सीमाहीन
बिन परिणाम सभ्यता-संस्कृति
रेंकत दउरल जात !

मारत लात केहू राजा, केहू-
नौकर कहलाय
श्रेणी खेल महाअभिमानी
हर अपमानित मन
धुआँ-धुआँ ओरहन.....

जवन आज के बिजय, पराजय
पहुँचत काल्हि कहाय
बिजय-पराजय के परिभाषा
बान्हत गाँठ छिंटाय

कइसन जीतल-हारल
ऊँचा-नीचा मृण्मय भाव
हाड़-माँस हीरा-कोइला
कुल्हिये माटी के जात

रज के ढँके रजत भा
ढँकले रजत धूल जम जाय
जल में लहर-बुलबुला
कुल्हिये पानी के परिजन
धुआँ-धुआँ ओरहन.....

दू

बइठ के गुमसुम सघन चुपचाप
आखिर का करत बाटे अकेला आदमी

खिड़कियन पर बारजन पर
छत सटल दीवार से चुपचाप
आदमी से आदमी सट के कहत
कहि के सुनत बा आप

लीक से हट के,
भुला के समय स्वारथ
मोड़ के मुँह राग-रंग मय मित्र समझौता
भुला के चन्द सुखद पड़ाव
आखिर मूर्ख बा, विक्षिप्त बा
कि ज्ञान मंडित
लोग झाँकत बा अकेला आदमी के
हर्ष में बाटे कि-
बा सन्ताप !
आखिर का करत बाटे अकेला आदमी ?

का कहे कइसे कहे कि हार के बन के
बिजेता के करद आधीन सुख इंकार
अस्मिता वापस लिहल जूठी भइल
अपना के ना स्वीकार
भले भर अवसाद कुण्ठा-त्रास
बन गुमनाम
ले सगरों तिरस्कृत क्षण
जियत अपमान
लेकिन ना झुकल
थूकल-खखारल हँसल-बिहँसल
और आत्म बिलाप
बाटे जोड़ के तोड़त कि-
बाटे तोड़ के जोड़त ऊ अपने आप !
आखिर का करत बाटे अकेला आदमी ?

कुमार विरल के दूगो गीत

(एक)

नेहिया फफा गइल तोहार, दिल दरिआव हो गइल !
टूटि गइले धीरजा के बान्ह कि भीतरे कटाव हो गइल !

जतिनें तू ढारेल नयनवा से पानी,
गच-गच डूबि जाला प्रेम के पलानी,

जिनिगी दहा गइल हमार कि कागज के नाव हो गइल !

बहुतें बिचार होई गइले उत्पाती,
बेरि-बेरि सिहरेला हियरा के बाती,

अँचरा के छँहिया बेकार कि बदरी के छाँव हो गइल !

छनें-छनें छछनें छछनवा छुछुनरा,
खनें-खनें खखनेला मनवा लुकुनरा,

सुधिया से घेरेला सीवान कि सपना के गाँव हो गइल !

डगें-डगें आफत अन्हरिया के ठांना,
छोटी-मुटी दिअरी, लुकाई कवना कोना,

सँउसे उमिरियाँ उधार कि घाव ठाँवे-ठाँव हो गइल !

(दू)

कहाँ बोईं बिअना

कहाँ बोईं बिअना आ नेह से पटाई ?
मन भाटी ऊसर बा कइसे उपजाई ?

अँखिया से जोतीला रूपवा के धरती,
कहिया से भाग मोरा असहीं बा परती,

सुनुगत सनेहिया के कइसे बुताई ?

अदबदा के अंखुआइल पीड़ा के बिरवा,
देहिया के रेती पर सिसके ना पुरवा,

माया मचान झूठ कउआ उड़ाई ?

चूना से टीकल तन पतुकी करिखाहा,
पुतला पुअरा के खाड़ जिनिगी रखवाहा,

आत्मा अनेरिया के कहवाँ बेलाई ?

चरन धूरि गइला से चान बा लेटाइल,
सपना के हाँसिल कबो ना गोटाइल

कइसे आकाश बीच शब्द के उगाई ?

कैलाश गौतम के दूगो गीत

एक

पहिने किरिनिया कऽ हार
खिरिकिया पे ठाढ़
भोरहरी सिंगार करै !!

झिलमिल-झिलमिल तलवा कऽ पानी
उतरि नहाले कवनो सोनवाँ कऽ रानी
लिहले उमिरिया कऽ भार
सुघर-सुकुवार
भोरहरी सिंगार करै !!

सतरँग चुनरी सुरुज रँग बिंदिया
नवरँग सजनी रचावैले मेहदिया
जगमग जग उजियार
झरैला कचनार
भोरहरी सिंगार करै !!

विहँसेला फूल मगन फुलवरिया
गंध में लतपथ कुसुमी चुनरिया
भँवरा करेला गुंजार
पँखुरिया निहार
भोरहरी सिंगार करै !!

पिया-पिया पपिहा पुकारे मधुबनवाँ
मीठी-मीठी बोलिया सुनावैले नयनवाँ
करैले कोइलिया पुकार
हो भँभवाँ के डार
भोरहरी सिंगार करै !!

दू

जिनिगिया लहर-लहर लहराय
आँख न ठहरै रूप के आगे
रूप देख बिछलाय !!

खेत भरल खरिहान भरल हौ ।
भरल-भरल हौ अँगना
नई-नई हौ देह सुहागिन
नया-नया हौ कँगना
रितु आवै रितु जाय, रहनियाँ
सौ-सौ झोंका खाय !!

अगले-बगले दस कै झरना
गूँजै मधुर बँसुरिया
झिर-झिर झिर-झिर बहै
बयरिया
फर-फर उड़ै चुनरिया
घर-घर बोले धार दूध कै
देख जिया हरसाय !!

मह-मह महकै बाग-बगइचा
चमकै ताल तलइया
फुलवरिया में तितली-भौंरा
नाचै ता-ता-थइया
घूघुट काढ़ दुलहिया निरखै
सुख ना कहीं समाय !!

गंगा प्रसाद 'अरुण' के दूगो नवगीत

(एक)

नयका जुग के
घिसल-खिआइल उहे कहानी,
राम कहीं !

मंच पुरनके, चिन्हल चेहरा
करिआ करनी, बाबूजी !

मुँह पर त मुसुकी के खेती
उगल कतरनी, बाबूजी !

मिल्लत के दिन
मिली-भगत पर चढ़ल जवानी,
राम कहीं !

फंदा अझुराइल
फरेब के जानल सरकस देखीं जी !
अपनापन के नांव अनादर
ताना-तरकस देखीं जी !
हँस जाला अँधियार
आँख के मूअल पानी, राम कहीं !

नया भोर के नया किरिन पर
करिया छाँहीं बबुआ हो !

आदित पर बेपानी बादर
आवाजाही बबुआ हो !

बरिसन के असरा अँखुआ
अँटकल ओरियानी, राम कहीं !

धनिया के ओठन से
कबके हँसी हेराई, भाई जी !

कहा-सुनी अनजाना भय
आ भाग दोहाई, भाईजी !

अगुआनी अगसरुआ
उदसल दीठि पुरानी, राम कहीं !

(दू)

तितली अइसन
उड़ि-उड़ि सगरो
गंध चोरावे के !

बहत झकोरन से पुरवा के
अझुरल अलकन से
कबो-कबो कुछ भाव लुटा दीं
बोझिल पलकन से
मन दरपन के मीत
गीत से
सुधि बिसरावे के !

साँसन के सरगम
धड़कन के माँदर के उर में,
फरफरात अधरन के आतुर
मस्ती के सुर में,
मन के पीरा पर
मीरा अस
पग थिरकावे के !

अब ना ऊ मोहन ना राधा
बाकिर राह उहे,
सै-सै रूप धरे के
मन में अजगुत चाह उहे,
जमुना तीरे
कुंज कुटीरे
रास रचावे के !

जगन्नाथ के एगो गीत, एगो चइता

गीत

आइल अस आँखिन में
सपना बदल
बिगड़ गइल जिनिगी के
सोचल सब खेल !
जोम में सिकहरा पर
चढ़ल वर्तमान
झाँक-झाँक के अतीत
बाटे हैरान
छूट गइल हाथ से
भविष्य के नकेल !
बुद्धि भइल बाहुबली
लमहर बा बाँह
हृदय का भेंटाइल बा
तरकुल के छाँह
साँसन पर लहरि रहल
सरगम बेमेल ।
आवँक में रहल ना
यथार्थ के मिजाज
खुद के विकृतियन पर
भइल बहुत नाज
छटक के परपंरा
से बनल बा पटेल !

कवने करनवाँ

सून लाग गउवाँ सिवनवाँ, हो रामा,
कवने करनवाँ ?

उहे बाटे धरती आ उहे असमनवाँ
सुरुज उगेला उहे, उहे उगे चनवाँ
बदलल काहें दो पवनवाँ, हो रामा,
कवने करनवाँ ?

गरजि-बरिसि जाई कवना अँगनवाँ
कब जरी घर, कब जरी खरिहनवाँ
कब लाग जाई गरहनवाँ, हो रामा,
कवने करनवाँ ?

सँझिए खा बन होला
खिरिकी-केवरिया
अँखिया से बिजुकल रहेले निनरिया
हदसल रहेला परनवाँ, हो रामा,
कवने करनवाँ ?

सोगहग लउके ना गाँव के सुरतिया
टुकी-टुकी होके छिनराइल मुरतिया
देखि के भकवान होला मनवाँ, हो रामा,
कवने करनवाँ ?

पाण्डेय आशुतोष के दूगो गीत

सुगना

रहि-रहि उड़े के पयान करे सुगना !
कबो देखे आसमान, कबो झाँके अँगना !!

देस-परदेस छूटल-
जिनगी के आसा !
दूध के कटोरा आगे
प्रनवा पियासा !!

दिनवा में मेला ठेला, रात कवनो रँगना !

जाने कवने चूके
देह दुनियां में आइल !
नेहिया-सनेहिया के
डोरे लपटाइल !!

घर-परिवार से निकाल देलें बिधना !

तन बाटे तार बीच
पाँव बा जंजीर में !
नीर बाटे आँख में
कि आँख बाटे नीर में !!

हियरा में पीर लेके, राम-राम रटना !

जब प्रान पिंजड़ा
के पार उड़ि जाला !
छन में टुटेला बीनल,
मकरी के जाला !!

एक मूठी आगि अउरी, एक बोझा लवना !!

ए जिनगी !

तोहार साथ ए जिनगी !
हम से ना होई !
अँसुअन में डूब गइल,
सगरो कहानी !
बेमतलब हर गलियन
भइनी बेपानी !!

आनी बानी दुनियां भर के सुन-सुन के,
चन्दन अस माटी में के माहुर बोई !!

दिन भर खटते खटते,
प्रान ई मरेला !
तब जाके दियना में
तेल कुछ, जरेला !!

अपने उलझन में सब कर दुनियां सेमटल :
मीत नाही एको, आ दुसमन सब कोई !

रात रात भर पपिहा
पिहके पिछुआरे !

उठ-उठ के झाँकि आई
अपने दुआरे !!

आंसू पोंछे वाला जहवाँ ना केहू !
अन्हरन में रो-रो के के दीदा खोई !!

पाण्डेय कपिल के एगो गीत

राउर मरजी

राउर मरजी, रउआ मानी ना मानी,

राउर मरजी, रउआ.....

केकरा से ना गलती होला
फुन्सी के जनि करीं फफोला
मत बातन के आउर सानीं,

राउर मरजी, रउआ.....

मनसा ना कुछ दोसर रहुए
बस, असहीं कुछ बात कहउए
टूटे के हद तक बात मति तानीं,

राउर मरजी, रउआ.....

नइखे लागल कवनो झगड़ा
छोड़ीं अब रगड़ा पर रगड़ा
एतना मत बनि जाईं गुमानी,

राउर मरजी, रउआ.....

सोचीं जे का सोची दुनिया
बात धुने में लोगवा धुनिया
झुठहूँ के अउरी ठेठाईं जनि पानी

राउर मरजी, रउआ.....

का फैदा कइला के नंगा
अब रउआ बनि जाईं गंगा
कुछऊ भइल नाहीं, असमन जानी,

राउर मरजी, रउआ.....

गीत

पाण्डेय सुरेन्द्र

मिठकी इयाद आवे, आवे याद बतिया
सुरतिया जे सतावेले तोहरी सुरतिया
नील-नील अँखिया में नील असमनवा
नजरिया जवरे उतरेला मन के भवनवा
उतारि लीहीं पालकी से पलका पर रतिया !
आधी-आधी रात रखके खुलल केंवड़िया
केवड़िया ऊपर टेक देनी माथ के पगड़िया
पुतरिया जोन्हि तिकवेले फेर-फेर मतिया !
जोड़ि-जोड़ि लड़ियन के सजेला सपनवा
सपनवा रतिया मोलेले मन के रतनवा
जतनवा कइसे करीं, मूँदीं कहवाँ मुरतिया ?

◇

पी० चन्द्रबिनोद के दूगो गीत

(एक)

आँख अब रउरा लगा के का करब ?
आन का घर जो हमेसे बा परब !

धुंध से भर जाय जो आपन गली
रोशनी के जोर के कइसे छली
होड़ में जी, जान देके का बरब ?

रेत में कबहूँ चली ना ई तरी
ऊँट से परतर बड़ा भारी पड़ी
साँच जइसन झूठ लेके का फरब ?

आइना पर अब भरोसा के करी
रूप लेके दरब से घर ना भरी
सामने बा काँट तबहूँ का चरब ?

रास्ता आपन बनावल बा सही
डाह से ना, चाह से सोना लही
सोच अइसन पोस रउरा का मरब ?

◇

(दू)

ओठ पर मुस्कान
मन में खीस बा !
देख रउरा के
करेजा बीस बा !

रोज भोरे काग
छानी पर उचर जाला!
का कहीं मन पर
पसेरी भर पड़े पाला!
मलछ जाला जीव
ईहे टीस बा !

आज घर में कटी पोसल जे
हवे पाठा !
खतम बाटे घीव
सुखले बनी पराठा
बगल से रिश्ता
तनी छत्तीस बा !

बन्धकी रख के
बँचित सम्बन्ध में दरजा!
लाज रह जाइत
मिलित हथफेर भा करजा !

का कहीं तारीख
जे छब्बीस बा।

◇

भौजी माने झगरी

© प्रकाश उदय

भौजी माने झगरी
पानी माने मछरी–
ना धइला खतिरा
बुड़ि-बुड़ि पोखरा नहइला खतिरा

मारे-मारे उपटी
भइयो जी के उपदी
छोड़इला खतिरा
'बाचा बाटे' -कहि के बचइला खतिरा

सरदी में हरदी
पियाई जबरजसती
दवइया खतिरा
घासो गढ़े जाय ना दी गइया खतिरा

कमरा प कमरा
ओ प अँकवरवा
जड़इया खतिरा
अपने के गारी दी सतइला खतिरा

जसहीं टँठाइब
फेरुओ डँटाइठ
काथी दो त, कब दो, ना कइला खतिरा
अउरू ना त डेलिए डँटइला खतिरा.....

◇

बरमेश्वर सिंह के दूगो गीत

(एक)

जिनिगी के चरखी घूम रहल
पलछिन आँसू भरल नजरिया
पलछिन हमिता पगल पगरिया
पलछिन हूक हार के पसरल
जीत के पलछिन धूम रहल
सपना सजे त अइसन लागे
ई दुनिया बा हमरे भागे
जिनिगी जियल कबो अनेरिया
कबो खुशी में झूम रहल
दिन के कोइल पंचम गावे
रात के उरुआ मुँह चिढ़ावे
साँप-चाल पर चलत जिनिगिया
सदा कुकुर के दूम रहल
बीच धार में नाव अकेला
लहरन के रेला पर रेला
कर्म-वीर नाविक के देखीं
निज पतवार बा चूम रहल
जिनिगी के चरखी घूम रहल

(दू)

खुद के तलाश में

खोजवा घटा बा
फइलल आकाश में

जंग लगल चिमनी के
कोख से निकलि के
रस कुल्हि पी गइल बा,
धरती के छलि के
घूमत बा लम्पट
स्वार्थ के झलास मे

कतना दिन हो गइल
सूरुज के खँखरल
कुहा बा, धुंध बा,
चारों ओर पसरल
काथी निरेखीं अब
सूरुज के लाश में

सूखि गइल फेंड़-पात,
नदिया सुखाइल
ऊसर में सगरी त
प्रेत बा टँगाइल
कुछुओ ना साफ बा,
साँवर प्रकाश में

आज काहें लागत बा
भुजा असमर्थ
काहें ना खोलत बा
जिनिगी के अर्थ
चलीं जी ! चलींजा,
खुद के तलाश में,
खोजवा घटा बा
फइलल आकाश में ।

अउँजाइल मन के गीत

बलभद्र

गोदिया में सुसुके गदलेवा कि
चुल्हवो धुँआजाइल रे ना
फूँकत-फूँकत लोर टपके कि
जिउवा अउँजाइल रे ना

अतने में हँसीं रोई गाई कि मन
के मनावते बीते रे ना
एके अस नाहीं माने मनवा कि
गाल थेथरावते जीते रे ना

घरवा के अलगे बा तास कि
छनहीं में गड़िया छुटे रे ना
कवने गुमाने झारे रोब कि नेहिया
ना जोड़ले जुटे रे ना ।

गीत

मनाज कुमार सिंह 'भावुक'

बाँझ हो गइल बा, संवेदना के गाँव
नेह हो गइल बा, बबूरवा के छाँव
प्यार-प्रीत के जमीन रेह हो गइल बा
आत्मा मरल मशीन देह हो गइल बा
लेत केहू नइखे इन्सानियत के नाँव !

करे जे अगोरिया से चोर हो गइल बा
देश प लुटेरवन के जोर हो गइल बा
कोरा में के लइका के जाई केने पाँव ?

जाति-पाति, धरम के उठेला लहरिया
रोटी बिना लइका के अँइठे अंतड़िया
कउवन के सभवा में होला काँव-काँव !

टुकी-टुकी गउवाँ आ टुकी-टुकी घरवा
घरवा में घरवा आ ओहू में दररवा
'भावुक' जिनिगिया ई लागी कवने ठाँव ?

◇

माहेश्वर तिवारी के दूगो नवगीत

(एक)

मन में बइठल
लगे अभंग सुनावेला केहू !
सुर के कपड़ा
हमरा के पहिरावेला केहू ।

करे बतकही
हलुका सुर में
जइसे जागलि
धुन नूपुर में
लहरि-लहरि से
चुनि के गीत बनावेला केहू ।

अब त सगरो
जिनगी सुर बा
नाद बरम के
बड़का घर बा
अंग-अंग में
पइठल जइसे गावेला केहू ।

(दू)

अइसन भइल अन्हार
अँजोरिया थर-थर काँपे
बाबा के अंगुरी
जस छूटल
किरिन-किरिन के
डोरी टूटल
टूटल कतो अरार
अँजोरिया थर-थर काँपे ।

करिया आन्ही
पागल घूमे
टूटलि डारि
उठा के चूमे
बादर चुने अंगार
अँजोरिया थर-थर काँपे ।

◇

दूगो गीत मिथिलेश गहमरी के

(एक)

बाट-बाट जिनगी छिंटाइल, साँस-साँस हाटे बिकाइल
सोनवा के पिंजरा किनाइल, दूध-भात खोरा भराइल
कि तबहूँ ना बिहँसे परान, भइल सउँसे उमिरिया जियान !!

चान-सुरुज मिल रूप सजावे, बिहँसि पवन नित चँवर डोलावे
गीत सुमंगल गावे पंछी, फूल सुगन्ध के नेह लुटावे
भइल धरती-गगन कुर्बान, कि तबहूँ ना बिहँसे परान !!

लीप-पोत के आंतर-अंगना, तुलसी चउरा बारि के दियना
मन-दरपन में छबि ले हर छन, नाँव रटत बा बेकल सुगना
बिना जल के भइल मछरी समान, कि तबहूँ ना बिहँसे परान !!

जनम-जनम के किरिया खइलीं, मान-मनउअल बहुते कइलीं
गाँव-नगर के परतुख देके, लाज के पगरी गोड़ प धइलीं
कहलीं 'अवगुन प मति द धियान', कि तबहूँ ना बिहँसे परान!!

◇

(दू)

कहीं लूटे ना असरा के थाती, पवन उत्पाती भइल,
डरे सिहरेली दियना के बाती, पवन उत्पाती भइल !!

सुधि के सगरवा में नेहिया के मोती
बिहँसेला जइसे सुरुजवा के जोती
बा लजिया के पहरा दिन-राती, पवन उत्पाती भइल !!
डेगे-डेगे काँटा बा फूल जस जियरा
भइल बेआकुल बा मन के पपीहरा
राम जानस कब बरिसी सेवाती, पवन उत्पाती भइल!!

चम्पा-चमेली, रातरानी फुलाइल
जिनिगी के सपना बेमौसम धुआँइल
पिरितिया के कजराइल पाती, पवन उत्पाती भइल ।।

◇

सुती ना भाई

मुफलिस

जागल आदिमी आजु सुती ना भाई
बहुते दिनन से तू पानी भरवल
जाँगर ठेठवलीं, बेगारी करवल
धोखाधड़ी से तू कइल कमाई ।।
हमरा के बँधुआ मजूरा बनवल
हरदम खोसारी के सातू चटवल
खाइल दही-दूध अपने मलाई ।।
रहे के सरन नाहीं, टूटलि पलानी
भूखो सभे के बा सूखालि जवानी
लइका रोवेलन, रोवेली लुगाई ।।
दादा के करजा नाती ना चुकवलन
पसेना के पइसा ओही में खापवलन
भइलि करजा के तबो ना सफाई ।।
समता के रोटी त सगरो सेंकाता
आदिमी के मइला कपारे फेंकाता
कहिया ले ? भँगिन के दुखवा ई जाई।।
न्याय सामाजिक के गाना गवाता
उगलि अँजोरिया ई रटना रटाता
कहाँ भइलि ? दुखियन के साँचो भलाई ।।
नफरत के लहरा लागल बाटे सगरो
सही आदिमी अब कहाँ जाके ? ठहरो
इन्सानियत के छुटलि बा रोआई ।।
नैतिक पतन देस के भइल कतना ?
कहले कठिन बा भइल आजु जतना
कहाँ बाटे ? मनवा में केकरो सचाई ।।
आजादी ले आइलि सहीदन के टोली
एही कुदिन खातिर खइलसि का गोली ?
भला के बा ? भारत के विपदा भगाई ।।

रामजियावन दास 'बावला' के एगो गीत

सोनवा के आखर

फूल जइसे बिहँसा
ओराय तोहरी भिरिया
जूड़ रहा बबुआ,
जुड़ाय तोहरी तिरिया !
चान भान सरिस
सरिरिया कै लेखा
कबहूँ नेयाय न
सुजसवा कै रेखा
बिरना तोहार बढ़े
बाढ़ की उमिरिया !

जन-जन जोगवैं
दुलार करै फरनी
सोनवा के आखर
लिखाय राउर करनी
टूट परैं लोगवा
बँटावै बदें पिरिया !

रन-बन सगरों
तोहार मिलैं दाह
रहिया में तोहरे
तोहार होयँ राही
बिधि निज हाथ
नित गढ़ैं तकदिरिया !

दुधवा नहाये के
असीसैं कलहिनियाँ
बावला सरिस
दोहरावैं मलहिनियाँ
कबहूँ ओराय ना
दुरुपती क चिरिया !
जूड़ रहा बबुआ
जुड़ाय तोहरी तिरिया !!

गीत

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

असरा के झुझुना बजावऽ
गोंइया,
हो बजावऽ गोंइया !
कि माइक पर वादा के ढोल
बाजल !!

घरे-घरे पहुँचल बहार के सनेसा
जिनगी के सोरा भइल, चहकल
अनेसा
पेड़न के पुलुई पर बइठल बा
कउवा,
घर के कबूतर उड़ावऽ गोंइया
हो उड़ावऽ गोंइया !
कि कचकच के अँगना बजार
लागल !!

बेलत बा केहू त खा ताट केहू
मीसत बा केहू, चबाताटे केहू
आइल बा रोटी पर दुनिया के
आफत
पानी से टिसुना बुतावऽ गोंइया,
हो बुतावऽ गोंइया !
कि घूमत बधारे बा साँढ़ दागल !!

खुसियन के पौधा में लागल बा
लाही
ललसा के घेंटी बा दबले तबाही
सुविधा के थरिया बा कसि के
पिटाइल,
काई के काँची बनावऽ गोंइया,
हो बनावऽ गोंइया !
कि अलवाँती पीरा के भाग
जागल !!

गीत

रिपुंजय निशान्त

सूरज डूब गइल सागर में
जग सुनसान भइल
दिन के अवसान भइल ।
सँझवत के बेरा पूजा कर
दिया बार तुलसी चउरा पर
जगमग प्राण भइल
दिन के अवसान भइल ।
अँखियन के सीपी से झर-झर
मोती छिंटा गइल अम्बर पर
दुधिया चान भइल
दिन के अवसान भइल ।
हियरा में इच्छा के गठरी
धर के सूतल सँउसे नगरी
स्वप्न सयान भइल
दिन के अवसान भइल ।

◇

डॉ॰ शम्भुशरण के एगो गीत

आज मोह तूरीं मत
कुछुओ तऽ गाईं !
हरसिंगार फूल झरे
अँगना के रोज भरे
खिरकी से पार करीं
किरिन-किरिन आईं !
आज मोह तूरीं मत
कुछुओ तऽ गाईं !
गगन-पंथ छोटा बा
कर्म बड़ा खोटा बा
बसल रहीं नयनन में
साध तऽ पुराईं !
आज मोह तूरीं मत
कुछुओ तऽ गाईं !
मुक्त करीं जीवन-धन
दूर कहीं ताप-तपन
अबहूँ त तृप्त करीं
अमृत-घन छाईं !
आज मोह तूरीं मत
कुछुओ तऽ गाईं .

◇

गीत सत्यनारायण के

अइसन बहकल-बहकल मौसम
महकल-महकल छाँव
सुनऽ अचक्के लौट न जाए
मौसम उल्टे पाँव ।
ल कोई रख गइल मुंडेरा प
सूरुज के फूल
जाने कतना रंग रँगल बा
घर के अँगना धूल
अइसन बरजोरी पुरवइया
छेड़े ठाँव-कुठाँव ।
जाने का हो गइल कि मन
उड़ चलल हवा के साथ
रह-रह बाँध रहल बा अब त
मेंहदी वाला हाथ
अब त माँग रहल बा सपना
भूलल-बिसरल दाँव ।
चूक उमर के होखे भा
कँचगर साँसन के भूल
बात-बात में बात आज त
पकड़ चुकल बा तूल
सुनऽ सुहागिन, अब त
जान गइल बा सउँसे गाँव ।

◇

डर लागत बा

डॉ॰ स्वर्णकिरण

उठल बवंडर कइसन बाटे
हहरत बाटे हियरा
पानी के बिन कंठ झुराता,
तेल बिना बा दियरा !
गरम झँकोरा का
आपन भाषा में बतलावत बा,
धीरज गायब होता
जइसे पर लागत बा !
डर लागत बा !

उछलत बड़ुए बेइंसाफी,
देखऽ, सब अचरज में !
बेहिसाब खरचा के वजहा
बाड़न सभे करज में !
असमय में नाचैत बड़ुए
कइसन चमगुदड़ी करिया,
मिठका शरबतओ
कि नीम हर-हर लागत बा ।
डर लागत बा !

मर्यादा के बाँध तूड़ के
नदी कि नद उफनत बा !
नया बदल खातिर अब कहवाँ
कवनो धनुष तनत बा !
आपन परछाईं बड़ए का
सच, आपन परछाई,
लऽ देखऽ भकसावन जादा
आपन घर लागत बा !
डर लागत बा !

◇

सहल कठिन बा

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

सहल कठिन बा, रहल कठिन बा,
कहल कठिन बाड़ लागे ।
लोक लाज से घिरल जवानी,
माँगि रहल हमसे कुर्बानी
प्रगट भइल लागे नादानी,
कइसे जग के बान्ह लाँघि के
डेग बढ़ाई आगे ?
भाव तहार चाव भर देता
बंकिम नयन घाव कर देता
धीरज धइल दाँव पर देता
चाहत बानी दूर पराइल,
दिल ना देला भागे ।
मन से मन के भाव बुझाता,
अपने से बन जाता नाता,
तब काहे केहू सकुचाता,
कल्पवृक्ष सामने खड़ा बा,
दीं ना कुछ बिनु माँगे !

कुंचित अलक पलक पर नाचे,
मुँह पर लिखल हृदय सभ बाँचे,
कल्पित बतियो लागे साँचे,
दिल के दर्द कंठ का राहे,
सरस, गीत बन रागे
जब पूनम चंदा मुसकाला,
छलकावे मधु-रस के प्याला,
मन में केहू झाँकि लुकाला,
छिपल कठिन जब घर वाला
दिन-रात बइठ के जागे !

◇

हरिकिशोर पाण्डेय के गीत

दाना लावा में फूट हँसल जे बाटे
बालू में पहिले बहुत बेर छपटाइल ।

पीपर में अँगुरी जेकर टुसियाइल
तीसी के नकबेसर जेकर दमकल
अंग-अंग सपना कवनो मोजराइल

अड़हुल लेखा सेनुर जेकर दमकल
ओह कनिया का आँखिन जे महुआ टपकल
अपना माई के पतझड़ देख लोराइल

जे सावन में पायल कूद नहाता
बइसाख-जेठ का जरत कोख से आइल
जे काजर से आँख हरिन बन जाता
ऊ लहोक पर मुँह का भरे धुआँआइल
जवन गाछ बा राजा जी के सेज बनल
आरी से पहिले पोरे-पोर कटाइल ।

गीत

डॉ॰ हरीन्द्र हिमकर

गीत कवन गाई एह गीतन का गाँव म
पाहुन सन मन रहल लजाइल ।
धनखेती में फूटल सोना
रुपनी बइठल बीनत मोना
जाँता से जिनिगी लपटाइल
छंद झर रहल घर का कोना
पाकड़ का पतइन से चिरइन के शब्द झरल
सरसों-सन रह गइल छिंटाइल ।
गगरी से छलक गइल पानी
बिखर गइल धरती पर चानी
छम-छम-छम बाजल पैजनियाँ
बउक भइल मनमउजी बानी
भाव भींज के चूअल सितिआइल धरती पर
माटी में रह गइल समाइल ।
कनइल के कंगन आ बाला
गेना के भर-गर के माला
हरसिंगार से भरल इ जुड़ा
फूल बनल फूलो वन-बाला
बँसुरी के तान बरस के भीनल दिशा-दिशा
गरभल स्वर-सरगम लरिआइल ।
बाजल घुँघुर खनकल चूरी
मिल गइल किसान के मजूरी
सोहर-झूमर बरस के पसरल
कम भइल बिरहियन के दूरी
गँवई धूरा जहवें से ऊड़ल गीत बनल
गीत हमर रह गइल भुलाइल ।

दूगो रचना भगवती प्रसाद द्विवेदी के

(एक)

घर में बाजार

पइसल बा घर में बाजार
देखऽ तेल, तेल के धार !
नाता-नेह रसातल में
परल अफदरा पाँतर में
कुहुके सोनचिरइया रहि-रहि
बा कलेस मन-आँतर में
लोर पीर के भइल पहाड़ !

दरबे ! चहबे से करबे
केहू से काहें डरबे
जिनिगी के बस तेही मकसद
सुख के तें दुनिया सरबे !
रिश्तन के होखे बेपार !

पच्छिम सुरुज उगावत बा
सभ टकटकी लगावत बा
माल खपा के, दास बना के
सभका के भरमावत बा
ऊ महतारी-बाप हमार !

साथी बनल मुदइया बा
आइल कठिन समइया बा
खुद पहरुवा सेन्ह लगावे
मातल नींन सिपइया बा
चाम के घर, कुक्कुर रखवार !

बाज गिरावे गाज इहाँ
सुटुकल चिरई आज इहाँ
सभकर सिट्टी-पिट्टी गुम बा
बा गिरगिटी समाज इहाँ
ठट्ठा मारि हँसे बटमार !

वाह ! तिजारत नारी के
नाता-नेह-इयारी के
भौतिकता का पाछा पागल
मिरिगा दुनियादारी के
चेतऽ होता बंटाधार !

पइसल बा घर में बाजार
देखऽ तेल, तेल के धार !

(दू)

लरुआइल हिन्दुस्तान

डसलस उग्रवाद के गहुँअन
साँसत में बा जान
पसरल पोरे-पोरे जहर,
लरुआइल हिन्दुस्तान ।

ऊ कऽहसु, सउँसे दुनिया में
आपन शान बढ़ल,
सोनचिरैया आजादी
पाके आकाश चढ़ल,
चलिके देखऽ, अबहूँ चेतऽ,
खुशी मनावत भाई
अँगना में हमनीं के
माई लहूलुहान पड़ल ।
धुआँ-धुआँ हो रहल आज
माई के ऊ पहिचान ।

नैतिकता हो गइल इहाँ पर
अब आकाश-कुसुम,
लूट मचल बा, मूल्यहीनता
बा कुक्कुर के दुम,
गिद्धन, कौवन आ चिल्होर के
दल के दल उमड़ल
प्रतिभावान राजहंसन के
अकिल हो गइल गुम
लूटे द्रौपदी, मुरलीधर
सुति गइलन चद्दर तान ।

पहिले रहे विचार देस ई,
अब बाजार भइल
लाँगट विश्व-सुन्नरी के
ई कोषागार भइल
शांति-कपोत उड़ावेवाला
पंचशील के पोषक
दावानल में कूदि
ऐटमी ई हथियार भइल
शायर, सिंह सपूत इहाँ के
चारण चतुर सुजान
का एही आजादी खातिर
बहल इहाँ पर खून
धरम, जाति आ सम्प्रदाय के
सभ पर चढ़ल जुनून
माई के टूकी-टूकी कइ
बेटा सुख पइहन !
बा धिरकार, तोहार लहू हऽ
आ कि जल के चून ?
कब ले रही भुनात इहाँ पर
बापू के सन्तान ?
पसरल पोरे-पोरे जहर,
लरुआइल हिन्दुतान ।

गीत

ए. कुमार 'आँसू'

बगिया में बिहँसल बहार हो, आइल फागुन महिनवा
फूलवा फुलेला कचनार हो, आइल फागुन महिनवा ।
कुहू-कुहू कोइली पेड़वा पर बोले
भेदवा छुपल सब जियरा के खोले
पपीहा करेला पुकार हो, आइल फागुन महिनवा ।
अमवा के मोजरा गम-गम गमके
महुआ से रसवा टप-टप टपके
बहेला जब फगुनी बयार हो, आइल फागुन महिनवा ।
सरसों के फूलवा के पीयर चदरिया
तीसिया के फूलवा लड़ावे नजरिया
मसूरी के अजबे सिंगार हो, आइल फागुन महिनवा ।
लाल फूल सेमरा पर चढ़ल जवनिया
अँचरा उजर ओढ़ि मुसुकाले धनिया
पलास के भइले सुतार हो, आइल फागुन महिनवा ।
गेंदा-गुलाब-सीरीस बड़हर फुलाये
सहिजन-नीबिया के फूल मन भाये
भँवरा करेला गुँजार हो, आइल फागुन महिनवा ।

◇

दूगो गीत कन्हैया पाण्डेय के

कइसे छोड़ीं गाँव

भीतरी-बहरी जिनिगी में अब,
शहर पसरलस पाँव !
बताई ! कइसे छोड़ीं गाँव ।

जहाँ सरेहिया हरिअर लउके
लहरल करे किआरी
दिन-दिन भर बाजे मुरली अस,
दुअरे पर बसवारी !
चवँर डुलावे पुरुआ-पछुआ,
जहवाँ ठाँवे-ठाँव !

पिपरा पतई थपरी पीटे,
झूमि के नीमिया नाचे !
गीतिया गावे कोइलरि रानी,
सुगना स्वस्तिक बाँचे !
सगुन जनावे भोरे आवे
कागा बोलत काँव !

रमई-बुधुवा-रहमत काका
मिलि-जुलि गावे होरी !
दुअरा-अंगना घर-सिवान में,
चहके सदा चकोरी !
किसन-कन्हइया राधे-मोहन
मिसिरी घोरल नाँव !

माँथ प अपना बान्हि के आवे,
सरिसो पिअर पगरिया !
जहाँ चनरमा उझिले आके,
अमरित भरल गगरिया !
दुलहिन बासन्ती के जब-जब,
रुन-झुन बाजे पाँव !

बैलन के गर बाजे जहवाँ,
हरदम टन-टन घाँटी !
छिदिर-बिदिर होई सब बिखरी,
सोन्ह सुगन्धित माटी !
दुश्मन ताकत बाड़े आपन
फेंके खातिर दाँव !

(दू)

जुटाईं कइसे ?

परि गइले सुखा असवो, साहु भइलन खाड़ा
हम जुटाईं कइसे,
तोहके डिबरू के भाड़ा ?

कउड़ी के मोले मोर बेंचि दिहलऽ गहना
जिनिगी सेराइ गइली सुनते उलाहना !
बाँचि गइल खाली एगो गिलिटी के छाड़ा
हम जुटाईं कइसे
तोहके डिबरू के भाड़ा !

सासु जी के लउके ना दिनवा भा रतिया
किरियो-करम खातिर होखऽ ता सँसतिया !
होई ऑपरेशन कइसे, परल बाटे माँड़ा
हम जुटाई कइसे,
तोहके डिबरू के भाड़ा !
लरिकन के कइसो-कइसो नइयाँ लिखवनीं,
कुरुता-कलम-कॉपी-जुतवा जुटवनीं !
महँगी के कटले बा सबका के हाड़ा
हम जुटाई कइसे
तोहके डिबरु के भाड़ा ?
जानऽ-बूझऽ पिया आपन अब्बो जिम्मेदरिया
परल बिया खटिया प बूढ़ महतरिया,
काहे तूँ परात बाड़ऽ काम देखि काड़ा ?
हम जुटाई कइसे,
तहके डिबरू के भाड़ा ?

◇

कइसे ढोआई जिनिगिया क भार

◘ कृष्ण बालापुरी

कइसे ढोआई जिनिगिया क भार !
हे सजनी, सोचि-सोचि टनके कपार !!
महँगी चढ़ल आवे बहँगी पर दिन-दिन
करजा क बोझा बढ़ल जाला निसदिन
थाकि गइल जँगरा कँहार !! हे सजनी.....
मतलब क रिस्ता इहाँ मतलब क साझी
पतवार न रखवार न भरोसा क माँझी
कइसे लागी नइया पार !! हे सजनी.....!!
ज़िनगी क फुनगी पर आसा क फुलवा
उगल ना छान्ही पर गुलरी क फुलवा
अँखियन में सपना हजार !! हे सजनी.....!!
सुखा क सपनवाँ के काटत जिनिगिया
जोड़त-बटोरत, जोगावत जिनिगिया
होइ गइल अब तारे-तार !! हे सजनी.....!!

◇

कब मिली मोर अधिकार ?

गरिमा बन्धु

होखे नाहीं कबो भिनुसार ए सजनवा मोरा !
लागेला ई रतिया कटार ए सजनवा मोरा !!
रहि-रहि तीर मारे कोइली गुजरिया,
अगिया लगावे इहो पुरुबी बयरिया,
मेटे नाहीं कबहँ अन्हार ए सजनवा मोरा !
अँखियो के नींन जाने कहँवा पराइल,
मनवा के साध जाने कहाँ उधियाइल,
केहू नाहीं लागेला चिन्हार ए सजनवा मोरा !
तनिको ना नीक लागे तोहरो भवनवा,
असरा में बीत गइले सउँसे सवनवा,
भादो मोरा भइले सुखार ए सजनवा मोरा !
दिनवा गिनत मोरा अँगुरी खियाइल,
बटिया जोहत मोरा आँख पथराइल,
कब मिली मोर अधिकार ए सजनवा मोरा ?

◇

रास-लीला

गहबर गोवर्द्धन

जमुना के तीरे-तीरे, राधा चले धीरे-धीरे
पुरुआ बहेला पुरजोर
अँगिया अनंग देखि, हीया में उमग देखि
पनिया में उठेला हिलोर ।
जशोदा के नन्द भइले मस्त देखि-देखि चंद
बंसिया पर छेड़ि दिहले प्रेम-राग मंद-मंद
राधा के चुनरिया से मधुबन महक गइल
बगिया में बिहँसे अँजोर !
लुका-छिपी रास-लीला खेले कान्हा राधा संग
चोरी-चोरी देखे खातिर बहे यमुना उतंग
कदम के डलिया से झाँकि-झाँकि चान लिहले
सगरी पिरितिया बटोर !
भाव में विभोर राधा, आपन सुध-बुध खोके
लोक-लाज भूलि गइली भंग प्रेमवा के पीके
बँसिया के छेदवा से धुन सुनि राधा-राधा
घटवा घेरेला चहुँओर !

◇

महेन्द्र मिसिर के इयाद में

गोपाल प्रसाद

पीरवा के घोंटि-घोंटि गीतवा बनवल
सुर के सिंगरवाँ से ओकरा सजवल
लोगवा ना भूले तोहर नाँव ऐ महेन्दर मिसिर !
खोजत बाटे लोग तोहर गाँव ए महेन्दर मिसिर !

पनघट, चउपलवा में आसन जमवल
पुरवी के जदुआ से सभ के लोभवल
कान्हा तोहर कदमऽ के छांव ए महेन्दर मिसिर !
धधके जहवाँ प्रेम के अलाव ए महेन्दर मिसिर !

'अंगना में कींचकांच' तूहें तऽ सुनवल
पुतरी के सपना के सेजिया डँसवल
डूबत रहे नदिया में नाव ए महेन्दर मिसिर !
मिलिहें कहिया रधिया के ठांव ए महेन्दर मिसिर !

कइसे तू फिरंगियन के पट्टी पढ़वल
कवन रंगरेजवा से चोलवा रंगवल
तोहर कवन-कवन रहे भाव ए महेन्दर मिसिर ?
खोजेले 'गोपाल', थकल पाँव ए महेन्दर मिसिर !

◇

जड़वा बैरी

चन्देश्वर परवाना

जड़वा सता दिहलस हमके हो,
मोर बैरी ई जड़वा !!
एक तऽ बुढ़ापा में दमा सतावे,
दूजे बेदरदा सरिरियाँ कँपावे,
डर से लुकाईले अड़वा हो !
मोर बैरी ई जड़वा !!!
सर-सर बयरिया करेजवा में बेधे,
कुइयाँ पोखरिया बुझा कि हमें खेदे,
काटेला पानी के घड़वा हो !
मोर बैरी ई जड़वा !!2!!

खाड़ दुपहरिया में ओढ़ीं रजाई,
दुड्डी से ठेहुना एके में मिलाई,
धेनुहीं बनल देहि तड़वा हो !
मोर बैरी ई जड़वा !!3!!
बइठि के कउड़ा लग काटेलीं रतिया,
केतने सुरधाम गइले हमरो सँघतिया,
जिनगी भइल बा पहड़वा हो !
मोर बैरी ई जड़वा !!4!!
मघवा में दुखवा बढ़ेला सवाई,
काम न करे एको बूटी-दवाई,
जियावेला तुलसी के कढ़वा हो,
मोर बैरी ई जड़वा !!5!!
गइया बछरुवा के बाटे कहाँ गाँती,
बकरी के उपरा चढ़ल साढ़े साती,
मरि गइल अँकरे के पड़वा हो !
मोर बैरी ई जड़वा !!6!!
सौ कोस पीछे जवनकन से भागे,
निबल आ रोगियन के खाड़ रहे आगे,
काँपेला लइकन से हड़वा हो,
मोर बैरी ई जड़वा !!7!!
चारि महिनवाँ इ काहेके आइल,
बरखा आ गरमी बुझाला बिलाइल,
एसे तऽ नीमन असढ़वा हो !
मोर बैरी ई जड़वा !!8!!

कइसे काटीं हो रतिया पहार बलमा !

दयाशंकर तिवारी

कहसे काटीं हो रतिया पहार बलमा,
सिहके पुसवा कऽ जुलुमी बयार बलमा !
बड़का लरिकवा कऽ छुटली पढ़ाई,
फाटि-फाटि छोट भइल बड़की रजाई !
मुँहवा ढापीं, होला गोड़वा उघार बलमा !!!!! कइसे.....
रतिया में हमरा के आवे ना ओंघाई ,

छुवले अकसवा के बाटे मँहगाई !
हफतो भर अब तऽ चले ना पगार बलमा ।।2।। कइसे...
ठिठुरल जड़वा बितावेलें लरिकवा,
तनिको ना पसिजेला देखि के मलिकवा !
अब तऽ परे लागल मघवा के ठार बलमा ।।3।। कइसे..
बुतवा से बहरे जिनिसिया कऽ दमवा,
हीत-मीत केहू नाहीं आवेले हो कमवा !
छुटल कवनो ना बाटे दुआर बलमा ।।4।। कइसे.....
छोटहर दिनवा के पतरी किरिनियाँ,
लगलीं ना अबहीं मटरियो में छिमियाँ ।
असो ऊखियो ना बाटे, सोभार बलमा ।।5।। कइसे.....
छोटको बेमार बाटे, होखे ना दवाई,
मरि-मरि जीयें रोज रतिया के माई !
बाबू पवले बाटे कइसों लवहार बलमा ।।6।। कइसे.....
टुटलें सपनवाँ गढ़ावे के झुलनियाँ,
सिरवा पर अपनो सवार भइल मुनियाँ !
अबहीं छोटकी ननदियो कुँआर बलमा ।।7।। कइसे.....
कहिया ले उगिहें हो भागिया कऽ चनवाँ,
जोहते-जोहते बीतें दिनवा-महीनवाँ ।
होला कथरी पलेटे भिनसार बलमा ।।8।। कइसे.....

एगो गीत, एगो चइता

नगेन्द्र भट्ट

(एक)

परती के दूब लहलहाइल, सुधियन के घटा उमड़ि आइल ।
हंस नियन दिन उतरल, नदियारे पानी पर
लहर-लहर लहराइल, दिन के अगुआनी पर
जाल डाल बालू पर किरनन के मछुआरा
जिनगी के ताल पर भुलाइल
परती पर दूब लहलहाइल !'

पैजनी के धुन बाजल, खेतन-खरिहानन में
गीत सजल फूल नियन जिनगी के आँगन मे
लाँघ-लाँघ पर्वत के देहरी के सोना अस
धरती पर किरिन उतर आइल
परती पर .....!!

वंशी बँसवारिन के, घुँघुरू पनघट परके
स्वर्ग उतर आइल रे घरघर में पल भर के
हरसिंगार छूँछी अस फूलि-फूलि झरे कहीं
कहीं कमल झील में फुलाइल
परती.....!!

टूटि गइल सपना, पगडंडी के सुनगुनसे
पाप-पुण्य बिसरि गइल भौंरन के गुनगुन से
होत भोर कइसन बयार बहल पुरुवा कि
जोन्हीं के आँचर उधिआइल
परती.....!!

पात-पात काँपि गइल पुरइन के जल थिरके,
भौंरन के सुधि आइल कवियन के तन फरके,
अनजाने कवना रे दुल्हा के हथवा से
चिटुकी भर सेन्दुर उधिआइल !
परती पर दूबि लहलहाइल ।

◇

चइता

पोरे-पोरे देहिया पिराला हो रामा, चइत मासे !

सहकल पछुआ चले हो सारी रतिया,
चित से ना उतरेला, उनुकर सुरतिया,
छनकल जिउआ डेराला हो रामा, चइत मासे !

हिरिदा के घउआ के केतनो बचाई
लागि-लागि जाला घाव केतनो बराई,
अचके में केहू से छुआला हो रामा चइतमासे !

गउआँ में होला रोजे खुनवाके होरी,
इरिखा के मलि-मलि मथवो प रोरी,
रोजे बैर गठिया बन्हाला हो रामा, चइत मासे !

कहवाँ फगुनवा में फगुआ गवाइल
चइत मे कहवाँ हो चइता सुनाइल
सुने खातिर मन अउँजाला हो रामा, चइत मासे !

फाटिफाटि जिनगी भइल जइसे गुदरी
देहिया छेदाइ के बनल बाड़ी बँसुरी
हरको से नैन भरि जाला होरामा चइत मासे !

◇

फागुन गीत

✍ रामनिहाल गुंजन

बहेला फगुनी बयार हो,
बीत गइल सरदिया ।
निकसे सुरुजवा सकार हो,
फुल गइली हरदिया ।
आवते फगुनवा,
उमिरिया गोटाइल,
चमके सरगवा में चाँन हो,
मुसकाइल अँजोरिया ।
सावन भादउवा के
लमहर दिनवा ।
बीतल कदउवा के रात हो,
झूमे मन के चदरिया ।

◇

बेटी के बिदाई

✍ राम प्रताप तिवारी 'प्रताप'

सींचि-सींचि नेहिया करेजवा के पानी
देइ दिहनीं बिटिया निकालि जिन्दगानी ।

पँजरी में प्रान-अस रखनी सँवारिके,
दियना के लौ नियर रखनीं सम्हारि के-
घर के किरिनियाँ निकालि के हे विधना !
देइ दिहनीं बिटिया सयानी खानदानी !

मन के हुलास ओकर आइल धधाइके,
बाबूजी -बाबूजी कहि धावे अगराइके,
सभ्य आ सुसंस्कृत बनाइके हे विधना !
बेटी दिहनीं अपने सरूप के निशानी !

सुखी रहऽ नेह के अँजोर जाइ करिहऽ,
जिनगी सँवारि डेग फूँकि-फूँकि धरिहऽ,
बोली के मिठाई भरि बन्हिहऽ सभे के उहाँ
गढ़िहऽ सुपावन सुकर्मी कहानी !

◇

दूगा गात

✍ शम्भु नाथ उपाध्याय

(एक)

आमवा में लगली मोजरिया हो, गावे गीति कोइलरिया !!
चम-चम चमके आकासवा में तरई
लेइ-लेइ चलि दिहली डाली अउरी कुरई
गउँवा से भोरहीं गुजरिया हो दुलुकत महुआ बरिया ।
फूल के बिछावल बाटे पीयर गलइचा
रसवा घोराइल बाटे सँउसे बगइचा
पिपरा डोलावेला चँवरिया हो, सीटी मारे बँसवरिया !!....
ठाँवा-ठाँई लागलि बाटे खेतवा में कटिया
मह-मह-महके अनाजवा से मटिया
बहे लागलि मातलि बयरिया हो, झूमे मस्त हो रहरिया !!.....
माता दाई झूले लगली नीमिया के डाली
पचरा गवाला, हार लेके आइल माली
नवमी के चढ़ी खीर-पूरिया हो, गाँवे-गाँवे घर-दुअरिया !!
चना-मटर-जव-गेहूँ आइल खरिहानवा
चिरई-चुरुँगवा बटोरे लागल दानवा
जलदी से होइत दँवरिया हो, भरित कोठिला-बखरिया !!

◇

(दू)

अबकी के अलगलिबे मोर खरिहनिया
धीरज तनिकी भरि धरऽ दुलहिनिया !
बड़का लरिकवा बा धइले नोकरिया
दीही कमाके जरूरे मोहरिया
रही ना पहिले नियर परेशनिया !!...
खाये के दे दिहले राम असो अनघा
माघवा में भइल सुतारे से बरखा
बछियो दी नाफा पोसलि मुलतनिया !!
छोड़ऽ फिकिरिया तू जाँगर लगावऽ,
रोवत लरिकवा बा, जाके बझावऽ,
राम जी जो चहिहें तऽ बनिहें झुलनिया !!

ओढ़लआ पहिरल केकरा ना भावे
नीमन चीजुइया ना के-के लुभावे
सभकर पियारी ह आपन धनिया !!

मालिक जो दे दे तऽ गहना बना दी
रूसलि दुलारी के अपना मना ली
सरगे के परी बना दी सजनिया !

◇

नेताजी !

डॉ. शिवदास पाण्डेय

रउआँ बानीं केतनो बन के बनवारी, नेताजी
सारी दुनिया के लोग देता गारी, नेताजी !

रउआँ राजे लागल आग, कुछ फरत नइखे
पेट खोलिये गरीब के भरत नइखे

भरल रउआँ घर खजाना सरकारी, नेताजी-
सारी दुनियाँ के लोग देता गारी, नेताजी !

हमर भाई कलकाता में ढोवेला मोटरी
हमरा बबुअन के जिनिगी भर माथे टोकरी

रउआँ माजा मारीं बनि के बिहारी, नेताजी-
सारी दुनियाँ के लोग देता गारी, नेताजी !

रउरा मथवा पर मोर के मुकुट लागल बा
रउरा हथवा सुदरसन चक्र टाँगल बा

रउआँ रखले बानी गुण्डन से इयारी, नेताजी-
सारी दुनियाँ के लोग देता गारी, नेताजी !

रउआँ बोली-बानी सभ में अजूबे बानीं
बेहयाई थेथरई में त खूबे बानीं

रउआँ जेलो जानीं जइसे ससुरारी नेता जी-
सारी दुनियाँ के लोग देता गारी नेताजी !

बात करे तक के रउआँ सहूर नइखे
कइसे समझींले जे दिल्ली कवनो दूर नइखे

बुड़बकाहीं करी कब ले होशियारी, नेताजी
सारी दुनियाँ के लोग देता गारी, नेताजी !

दसशीश पाँच शीश के असुर होला
केहू रावन कहाला केहू मुर होला
बन के आई केहू जल्दीए मुरारी, नेताजी,
सारी दुनियाँ के लोग देता गारी, नताजी !
रउआँ बनीं केतनो बन के बनवारी, नेताजी
सारी दुनियाँ के लोग देता गारी, नेताजी !

कहर कइसन आइल

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

अचके में हाय कहर कइसन आइल
लाशन के ढेरी से धरती पटाइल
कइसन बेमौसम के उठल बवंडर
छन भर में सभ फूल-पत्ता गइल झर
उजड़ल खोंता आ तिनका छितराइल
अचके में हाय.....
कुछ सोंचे-समझे के पलखत ना मिलल,
भरका-भरका के भवन कतना गिरल
कइसे का हो गइल, कुछ ना बुझाइल
अचके में हाय.....
अइसनके लागल कि आकास टूटल,
तड़ातड़ गोला आ बारूद छूटल
आइल कयामत, ई दहशत समाइल
अचके में हाय.....
पलक झपकते सभ बदल गइला मंजर,
मकानन के जगह मलबा आ खंडहर
मलबा में अनगिनती जिनगी जँताइल
अचके में हाय.....
चीखन-पुकारन से दिसा-दिसा गूँजल,
माई के ममता मासूमन से रूसल
कतना सुहागिन के सेनूर पोंछाइल
अचके में हाय.....
पल में हँसी-खुसी मातम में बदलल
देखत-देखत बाग के बाग उजड़ल

परलय के छाया छाछात मँडराइल
अचके में हाय.....
चारों तरफ बस तबाही तबाही
जूझ रहल मउअत से जिनगी-सिपाही
होनी का आगा सभ अकिल भुलाइल
अचके में हाय.....
लाखन लोग बेघर लाखन घवाहिल
कतना मुअल लोग कहल बा मुश्किल
अइसन भूँडोल ना पहिले सुनाइल
कतना त गउँवें के नउँवें बुताइल
अचके में हाय.....

गँवई के रहनिहार

● शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

गँवई के रहनिहार हईं !
दुअरा निबिया के गाछी बा
छाया में बान्हलि बाछी बा
राढ़ी ऊखी के पतई से
सरवतल पलानी साखी बाऽ
गउवाँ में आवे वाला से
हम सादर मिलनिहार हईं !! गँवई के.....
कन्हिया पर लमहर लाठी ले
जब गाँव के गोइड़ा जाईले
धूहा बनाइ के खेतन में
चिरई-चुरुँग हुलकाईले
तूँ पढ़ल-लिखल मनई शहरी
हम भइँसि चरावनिहार हईं !! गँवई के.....
कउड़ा लउके दुअरा-दुअरा
बा पड़ल पहल कोदो-पुअरा
देहिया जाड़ा से काँपेले
सँझिए छितरा जाला कोहरा
तूँ सूतऽ रुआ-गलइचा पर
हम जाड़े ठिठुरनिहार हईं !! गँवई के.....

ईंटा-भाठा पर ढोईले
मेहनत के बीया बोईले
अपने नसीब पर सोचि-सोचि
के दिनवा-रतिया रोईले
ना मिले मजूरी तब उपास
हम भुँइया सूतनिहार हई !! गँवई के.....

हम खून-पसेना बहा-बहा
धरती से अन्न उगाईले
देसवा के सेवा खातिर हम
सभके संग हाथ बटाईले
कवनो आफत का मोका पर
हम पहिले जागनिहार हई !! गँवई के.....

◇

कहाँ छिपल नवजुग के सूरज ?

श्रीराम सिंह 'उदय'

नाव फँसल मझधार भंवर में, आँधी, झंझा-ज्वार बा,
कइसे भला पार ई लागी, दुर्बल खेवनहार बा ?
सभे बनत बा हरिश्चन्द्र ही,
सभे बनत निष्पाप बा,
सभे बनत बा दूध के धोवल,
निज गुन गावत आप बा,
बगुला भगतन के ही सगरे गूँज रहल जयकार बा !
नेता लोगन के हक बाटे-
भ्रष्टाचार-घोटाला के,
मंत्री लोगन के हक बाटे-
देश के करे दीवाला के,
केहू-केहू के ना रोकत, सब के मिलल सुतार बा !
असली के बा, नकली के बा,
मिलत ना कुछ अंदाज बा,
चेहरन के पहिचान कठिन बा,
सभे मुखौटाबाज बा,
अन्हरन के दर्पण देखलावल बेवकूफी-बेकार बा !
चोरी-ठगी-डकैती बाटे,
मारकाट बा, लूट बा,

सगरे फसल चोर रौंदे-
खातिर साँढ़न के छूट बा,
आतंकिन के सर पर त खूनी शैतान सवार बा ।
भाई से भाई रूठल बा,
घर-आँगन सभ रूठल बा,
अगल-बगल में आग लगावे-
वाला ही सब जुटल बा,
पंचन के भी दिल के भीतर कइँची अउर कटार बा ।
महल-कोठियन-होटलन में त
कचरकूट बा-मस्ती बा-
रोटी, कपड़ा के तरसंत-
बेबस मड़इन के बस्ती बा,
आश्वासन-भाषण-नारा बा, सभा-जुलूस अपार बा !
घोर अन्हरिया रात में राही-
आपन राह भुलाइल बा,
कहाँ बा मंजिल ? ऊहापोह में-
मन एकर बंउवाइल बा,
कहाँ छिपल नवजुग के सूरज के जगमग उजियार बा ?

◇

सगरा से होइते बिआह

सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'

सावन महिनवा में गड़ही ललकली
सगरा से होइते बिआह !
कइलस सिंगार उनकर खेतवा के पनिया
लहरेला धार जइसे लहरे जवनिया
रचे अभरन उनकर धरती मतरिया कि
खूनवा के उमगल दाह ! सावन महिनवा में...
सनकल पवनवा चलल जइसे नउवा
लेके निआर गइल सगरा के गँउवा
पतिया निरेखेला बिहँसत सगरा कि
मनवा में अधिका उछाह ! सावन महिनवा में...
रहसत सगरा पवनवा से बोले
मनवा के गाँठ ओकरा से लागे खोले
सावन पुरनिमा दिनवा नगीच बा
केहू ना आपन ददखाह ! सावन महिनवा में...

कहि दीहऽ, जठ में निआर भेज दीहऽ
थोर दिन मनवा के बस करि लीहऽ
सदिया-बिअहवा समय से होखे के चाही
तबे मिटी मनवा के चाह ! सावन महिनवा में...

बढ़ते चइतवा के सूखे लगली गड़ही
मनवा के साध रह गइल उनका मन ही
बयर पिरितिया समान में करे के चाहीं
बिना कइले कोई परवाह ! सावन महिनवा में..

○

गं...

स्वामी फन्दोतीर्णानन्द पुरी

गइलीं मन मितवा सबेरे तोरा गाँव रे !!
गउआँ किनारे बाटे छोटकी पहड़िया !
उसरा में लागल बाटे कुरुथी रहरिया !
छोटकी चिरइया पऽ गउआँ के नाँव रे !! गइलीं

रहिया में मिलली चलत धेनु गइया !
पाछवा ले आवेला लखेदले कन्हइया !
देखि हँसे हमरा के, कहे, लागीं पाँव रे !! गइलीं

खेतवा में हर जोते धरती के बेटवा !
देखलीं सटल ओके पीठिया में पेटवा!
सेढ़ा साठी मकई गँजाइल एके ठाँव रे !! गइलीं

गउआँ के चारू ओरि काँट के घोरनिया !
फरकेले लउकेला रेंड़ के बगनिया !
अपना-पराया के ना बाटे बिलगाव रे !! गइलीं

सुखि गइले भेलवा कटाई गइले पीपरा !
भसि गइले कुंअवा घेराई गइले दुअरा !
धरना में रह तारे मोटका बिलाव रे !! गइलीं

महुआ का पेड़वा तऽ कोई नाहीं जाला !
लोग कहे, राति खा सियार चिचियाला !
केहू ओने जाये के ना करेला हियाव रे !! गइलीं

नदिया किनारे अबो होला मरिचइया
पेड़वा पऽ खोंता लाइ लटके चिरइया !
नदिया का धार बीचे चले अबो नाव रे !!

○

गीत

० हीरालाल 'हीरा'

बदरा काहें दो ना आवत बाट, मोरा नगरी !
खाड़ा होके मकई रोवे, बइठल रोवे धान
सुतल रहरिया सुसुकी मारे अब ना बाँची जान !!
उखिया ओठँगि-ओठँगि के रोवे, लोरवा ढरके गगरी !

जेठ से जेठ भइल बा भादो, अगिया बरिसे नभ से !
नदिया के बल थाकल जाला, ससुरा पहुँची कइसे !!
धरती पहिने ऊजर सारी, तजि के धानी चुनरी !

धूर छवरि के भूभर बनि के जारे लागल पाँव !
भादो में कनई ना लउके, दहकि रहल बा गाँव !!
बोली बन्द भइल बिरवन के, मोरा गउँवा कगरी !

ना सुनाव दादुर के बोली, झींगुर देव न तान !
देख जजतिया झुलसत आपन, व्याकुल भइल किसान !!
कइसे करजा भराई, बा बकाया सगरी !

सागर से जल लेके बदरा चललें हमरा देश !
बीच डगर कोहनइले जाने, कहवाँ लागल ठेस !!
मन के मोरवा नइखे नाचत, सपटल कोना अँतरी !
बदरा काहें दो ना आवत बाटे मोरा नगरी !!

◇

पिरितिया के नाँव

० त्रिलोकीनाथ तिवारी 'लोकदर्शी'

काहें अइसे मरल कुठाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !!

गइल खुनिआइ मोर सोनहुला सपनवाँ !
फाँसी पर झूलत बाड़े पोसल अरमानावाँ !!

डूबल पिरितिया के नाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !
काहें अइसे मरल कुठाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !!

लहसल बगिया में रोवे कोइलरिया !
अँखिया से छलकेली भरल गगरिया !!

हारि गइनी जिनिगी के दाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !!
काहें अइसे मरल कुठाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !!

मउअति दुअरिया बाजावेली सिंकरिया !
भरल भवानावाँ में दहकत भउरिया !!

लागता बीराना अइसन गाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !
काहें अइसे मरल कुठाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !!

बनि के हँकारी आइ जइती बदरिया !
जाइके सुनइती मोरा बाबुल के खबरिया !!

लोकदर्शी रोइतीं थके पाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !
काहें अइसे मरल कुठाँव हो, करेजावा में भरि गइल पीरावा !!

◇

चिठ्ठी आइ गइल बा

● अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

मन में लागल बजे बँसुरिया
चिठ्ठी आइ गइल बा
छलके लागल नेह-गगरिया
चिठ्ठी आइ गइल बा ।

चिठ्ठी में लिखले बाड़न कि-
फगुआ ले हम आइब
तब तक ले पगार पा जाइब
बोनस भी पा जाइब
चिंता के कुल्हि छँटल बदरिया
चिठ्ठी आइ गइल बा ।
मन के नाचे लगल पँवरिया
चिठ्ठी आइ गइल बा ।

अइहन खूबे फगुआ खेलब
आपन साध पुराइब
खूबे मउज उड़ाइब, साथे-
साथ सिनेमा जाइब
सरधा से मन भइल कँवरिया
चिठ्ठी आइ गइल बा ।
मन उड़ि के जा पहुँचल झरिया
चिठ्ठी आइ गइल बा

नन्हका खुश बा नया-नया
कपड़ा बाबू ले अइहें
मेला अउर बजार घुमावे
साथ-साथ ले जइह
चलत बाय अगरात डगरिया
चिठ्ठी आइ गइल बा
मन के बरधा करे दँवरिया
चिठ्ठी आइ गइल बा !

तूं छू द प्राण हमार

◘ अनिल ओझा नीरद

तूं छू द प्राण हमार गीति बनि जाई !
तूं दे द तनी दुलार, प्रीति लगि जाई !!

जे कुछु अभुराइल बा ओह के सभुरा द !
बस हियरा में कवनो हिलोर लहरा द !!
हमरा अँखियन के सावन सुखत न बाटे-
एह भटकल जिनिगी के कवनो असरा द !!

तूं दे द नेह, दिया हमार बरि जाई-!
तूं छू द प्राण हमार !!

हमरा मन में ना अहंकार अब कवनो !
हमरा मन में ना अब विचार ना कवनो !!
हम वीणा प्राण के सजा के बइठल बानी !
तूं एकरा में झनकार उठा द कवनो !!

तूं कर इशारा भरि, मन अगरा जाई !
तूं छू द प्राण हमार !!

तूं स्वाती जल बनि के काहें तरसाव !
तूं चातक अस काहें हमके भरमाव !!
दुइ बूंद बदे तोहरा नेहिया के तरसीं -
तूं अपना गागरि के सागर छलकाव !!

बस पल-दू-पल झरि जा, फुहार परि जाई !
तूं छू द प्राण हमार, गीति बनि जाई !!
तूं दे द तनी दुलार, प्रीति लगि जाई !!

◇

बार गइले दीया

◘ कमलदेव राय

मुनिया-पुरनिया के बोअल हउवे बिया,
बार गइले दीया अंजोर कर हिया !

तप के तेल साधना के बाती
जोति के दियरी जरे दिन राती
रचि-रचि धइले ज्ञानवा के थाती

पढ़ि-पढ़ि पूतवा मरम भरि छाती
पीयते अमृतवा जुरा गइले जिया !
लोरवा के तेल उमरिया के बाती
नितरी के दियरी जरे दिन-राती
पथरल नितरिया माहे डगरिया
पुरब के ओरिया गइले सँवरिया
कउल-करार सभ क चउल कइले पिया !
लड़ुआ के तेल जवनिया के बाती
सिवानवा-जवनवा जरे दिन-राती
हिया के नेहिया ढ़रले हीरवा
देश-दियरवा के बरले बीरवा
जूर ना होखे अहुतिया के जिया !

ज्ञान के अँजोर

डॉ. गजाधर प्रसाद गंगेश

मइया ! विनती करीला कर जोर कि
ज्ञान के अँजोर करऽ !
चेतना क दीप जरे मन के मंदिरवा
विद्या-बुद्धि क पलुहे निस दिन बिरवा
आंधी नफरत क दे न झकझोर कि-
ज्ञान क अंजोर करऽ !
एकता-अखंडता क गगरी ना फूटे
केहू सान्ति-सद्बुद्धि के नगरी ना लूटे
सुख-समृद्धि के आवे नया भोर कि
ज्ञान क अंजोर करऽ !
सूखे न पावे सद्भाव के तलइया
डूबे ना भंवर बीचे देसवा क नइया
लाख बिपत क उठे हिलकोर कि-
ज्ञान क अंजोर करऽ !
दे द माई अइसन विवेकवा क जोती
सबका हिया में उपजे मानवता क मोती
टूटे ना सनेहिया क डोर कि
ज्ञान क अंजोर करऽ !

गीत

✍ गुरुचरण सिंह

अब नइखी पहिले नियन मउगी गँवार हो !
जे चाही कइसे लूट लिही, बीचे बाजार हो !
पढ़ि-लिखि नारी भइली एम. ए., बी. ए. पास हो,
सभा क्लब आफिस में सगरो ई जास हो,
खाली नाहीं घरवे में करेली सिंगार हो !
एम पी, एमेले बनि देशओ चलावेली;
घरवा में नीक-नीक व्यंजन बनावेली,
हँसिके लुटावेली सजनवा पर प्यार हो !
खेलकूद-कुश्ती में कम नइखी तनिको;
नाच के देखावेली जरूरत पर डिस्को,
जुडो-कराटे के ट्रेनिंग में होशियार हो !
एस. पी., कलक्टर बनि चलावताड़ी शासन;
मंत्री बनि मंच पर बघारताड़ी भाषन,
डॉक्टर बनि देश के उतारेली बोखार हो !
रउओं अब नारी के महत्व स्वीकार लीं;
डूबत देशवा के अबहीं उबार लीं
नारी बनि जइहें नइया के पतवार हो !
जे चाही कइसे लूट लिही बीचे बाजार हो !

◇

गीत

✍ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

फुनगी ऊपर, बइठ गाछि के, नीलकंठ बन जाइब साथी !
आई अगर बीच में दूरी,
तब बुझिहऽ मन के मजबूरी !
प्रान तेयागल हम ना चाहब
परल पलंग पर रगरत खुरी !!
बंधन फान, हमेसा ऊपर, धुआँ अइसन जाइब साथी !
रौशन हाथ लगावे दस्तक,
वक्त-पौरुष, उत्साहो काफी !
हीत-मीत आ अटूट एकता
पथ अंजान अन्हरिया बाकी !!

थाकल देह, भरल अनुभव से, भुलियो ना ठुकराइब माथी !
नाँव 'हुसेने' के जग जाहिर,
या 'मजीद', कहवाँ बतलाव !
रौशन राह करेला जग के,
सदा सदाकत-पथ अपनावऽ !!
झंझोवात, बुझा ना पवलस, दीपक-ज्योति बचाइब साथी !

◇

गीत

● जवाहर लाल 'बेकस

एक बेर मंत्र फेरु मार से मदारी !
हमहूँ बनि जाईं दर-दर के भिखारी !
जादू के चदरिया में हमके उड़ा द
रतिया मानुस, दिन सुगना बना द
दुनिया के बगल कउनो काम ना बा भारी
एक बेर मंत्र फेरु.....
जिनिगी के' सारा प साँस छटपटाता
जरि गइल देह खाली ठठरी धुँआता
हियरा में धधकता हूके लुकवारी
एक बेर मंत्र फेरु.....
असरा के धरती दरकि जनि जाये
सँइचल सिन्होरवा चरकि जनि जाये
डर लागे नेहिया ना धावे फुफकारी
एक बेर मंत्र फेरु.....
डमरू के डमडम, बँसुरी के टांसी
सुनि-सुनि मन करे लाई लिहीं फाँसी
करीं का जतन कइसे फानी छदेवारी
एक बेर मंत्र फेरु.....
कल्पना के पाँखे-पाँख भावमें रंगाता
पोरे-पोर गीत के दरद गुनगुनाता
सपना के साथ रोवे मन के दुआरी
एक बेर मंत्र फेरु मार रे मदारी !

◇

जिनिगी

देव कुमार पाण्डेय व्याकुल

कतना नाच नचवलू, जिनिगी !
अनहोनी खातिर हमरा के-
तू कतना तरसवलू जिनिगी !

कतना नाच नचवलू जिनिगी !
लउकत नइखे केहू आपन,
ढूँढ़-ढूँढ़ थकलीं अपनापन,
जटही के वन में हमरा के-
तू कतना भरमवलू जिनिगी !

भीतर आउर, बाहर आउर,
दुनियाँ बाटे कतना बाउर,
डाल मोह के कुटिलजाल में-
पागल हाय बनवलू जिनिगी !

कतना जहर पचावत जाईं
कइसे नेह बचावत जाईं
जनमे से हमरा हियरा में-
कतना जेठ बसवलू जिनिगी !
कतना नाच नचवलू जिनिगी !

आज के चिन्ता

बलभद्र कल्याण

कहाँ गइल मोजर के गन्ध, कहाँ गइल बरगद के छाँव ?
बगिया से रूसल बसन्त, मरघट में बदल गइल गाँव ।

पनघट पर अब न जुटे भीर, घूँघट से गायब मुस्कान,
राधा के पायल बा शान्त, बन्द भइल बंसी के तान ।
कोइलर ना कुहुके भिनुसार, कौअन के बढ़ल काँव-काँव,
कहाँ गइल मोजर के गन्ध, कहाँ गइल बरगद के छाँव ?

पसरल जे रहे लतर ढेर, उजर गइल सगरो जर-मूल,
चम्पा का नाँव बचल ठूँठ, परती में हँस रहल बबूर ।
सूख गइल मेहँदी के बाड़, थथम गइल दुअरे पर पाँव,
कहाँ गइल मोजर के गन्ध, कहाँ गइल बरगद के छाँव ?

नकली के सगरो भरमार, माटी से छूट गइल नेह,
दूलम बा निरमल बेआर, बरम रहल जहर भरल मेह,
भकुआइल बेबस बिज्ञान, सुफले होत ना कवनो दाँव,
कहाँ गइल मोजर के गन्ध, कहाँ गइल बरगद के छाँव ?

परदूसन सुरसा बन ठाढ़, परबत से बाढ़ के सुतार
धुआँपान में भारी सान, कैंसर बढ़ रहल धुआँधार
मचा रहल लोगवा अन्धेर, सही गलत समझे ना ठाँव,
कहाँ गइल मोजर के गन्ध, कहाँ गइल बरगद के छाँव ?

◇

तोहरी सुरतिया

ब्रजेश नारायण झा

तोहरी सुरतिया मनवा बसल बा
तोहरा बिन ई मनवा लागे बा

अँखिया में तनिको निंदिया ना आवेला
रहि-रहि हमरा के ई बिंदिया चिढ़ावेला
तोहरी मुरतिया मनवां बसल बा
तोहरा बिन ई मनवां लागे बा !

जेकर जियरा भइल ओकरे हम भइनीं
सपना में जेकरा देखलीं, ओकरे हम पइनीं
पहिली पिरितिया मनवाँ बसल बा
तोहरा बिन ई मनवां लागे ना !

अइहें मोरे भवनवां पहिर-ओढ़ि पियरी
हम त जराइब अपना मन के ड्योढ़ी दियरी
तोहरी पिरितिया मनवां बसल बा
तोहरा बिन ई मनवा लागे ना !

◇

थिरकन लागे बसन्त

डॉ. मधु वर्मा

सखि हे, फागुन आइल
थिरकन लागे बसन्त
चहुँदिशि भंवरा गूंजन लागे
बिहरे कलियन संग

कुहूँ-कुहूँ कोयल तान सुनावे
गमके बौर गम-गम
ता-ता थइया छम-छम नाचे
मौसम बन-उपवन
उड़त गुलाल लाल भइल बादर
इन्द्रधनुष सतरंग
भरि-भरि रंग मारत पिचकारी
स्याम-प्रिया के संग
मधुवन रास-रंग में भींजल
गोपियन के तन-मन
फगुनी बयार सरकावे चुनरिया
सिहरे सब अंग-अंग
अकुलाइल मन बाट निहारे
कंगना खनके खन-खन
बउराइल दिन करत ठिठोली
मनुहार पिया छन-छन
आवत पिया के नेहिया रंगाइल
बिहँसल नयन रतन ।

◇

जिनगी

✍ योगेन्द्र पाण्डेय 'योगेश'

ई जिनगी पानी के बुलबुला
रहेला मन काहे फुला फुला!!
माटी के पिजड़ा में सोना के चिरई
फूट जाई पिजड़ा टिहुक जाई चिरई
इ चिरई हवेऽ चुलबुला, जिनिगिया.....
एही जिनिगिया के अजबे कहानी
ना रहले संत-मुनि, ना राजा, ज्ञानी,
सभे झूले माया के झूला, जिनिगिया....
इहवां लुटाई से उहवाँ पाई,
इहवां जोगाई से उहवां गंवाई
ई ना बुझे मरम ऊ ह चुला-जिनिगिया

हम-हम, तू-तू के काहे के झगड़ा
धन शोहरत लागि काहे के रगड़ा
इ मुरगा जइहें अकेला, जिनिगिया

नेहिया के दिअरा सनेहिया के बाती
मन के अटारी जराई दिन-राती
सुनें वाला गुरू हम चेला,
जिनिगिया....

◇

कान्हा के कसूर

राजकुमार 'प्रेमी'

घरवा बोलावत बाड़ी, यशोमती मइया
कान्हा भईया हो, सखी आइल बाड़ी सभ दुआर
रोई-रोई सखिया, करेली गुहरबा
कान्हा भईया हो, रउएँ के कहेली कसूरवार !

कहतारी पानी भरके यमुना से आवत रहीं
कहीं ना मुन्हार होके, रहि रहि धावत रहीं
घइला कान्हा फोड़ि दिहले कंकरी से मार
यशु मइया हो, रउएं करीं मन में विचार !

सखी के बचनियाँ सुनि, कान्हा मुसुकइले
माई के सुमीरि, मने-मन समुझइले
कदमऽ तूरतऽ रहीं, कंकरी जे मार
मोरी मइया हो, इहे बा कसुरवा हमार !

सखी के बचनियाँ सुनि, माई खिसिअइलीं
अभी कान्हा कान अइँठब, मारब, धमकइली
हमरा से घइला लेलऽ आरजू हमार
ललिता बबुनी हो, कान्हा के कसुरवा दऽ बिसार !

◇

पूछेले हमसे

डॉ. राजेन्द्र भारती

हाय, पूछेले हमसे, दरद कहवाँ होला
दरद उहवाँ होला, भरम जहवाँ होला

लोग तील के ताड़ जइसन नापेला अब
बात इचकी भर निकसल कि बाँचेला सब
हाय, पूछेले हमसे, भरम कहवाँ होला
भरम उहवाँ होला, शरम जहवाँ होला

आगि लागल बा दुनिया के जाँगर में अब
तुलसी नइखी रहत केहू के आँगन में अब
हाय, पूछेले हमसे, शरम कहवाँ होला
शरम उहवाँ होला धरम जहवाँ होला

जब पूछेला केहू हमार गउआँ के हाल
'भारती' कहेलन शहरो से बा अब बेहाल
हाय, पूछेले हमसे, धरम कहवाँ होला
धरम उहवाँ होला, मरम जहवाँ होला

◇

गीत

राधिकारंजन सुशील

आँख नम हो गइल दिल में गम हो गइल
दर्द आइल
जिन्दगी से खुशी जब पराइल ।

हो गइल वक्त काहे लुटेरा
छा गइल जिन्दगी में अंधेरा
रोशनी कम भइल, घर में मातम भइल
खुशी जब पराइल, डर समाइल । जिन्दगी से .....

प्रेम के हो गइल बा समापन
केहू लउकत ना बा आज आपन
होके विचलित इ मन, भय से सारा बदन
खुशी जब पराइल, थरथराइल । जिन्दगी से.....

बा गरीबी अजब ई अनोखा
मिल गइल आज अपनो से धोखा
आसरा जर गइल, भावना मर गइल
खुशी जब पराइल, दिल दुखाइल । जिन्दगी से....

ई नरक हो गइल जिन्दगी बा,
आज सउँसे शहर गंदगी बा,
लाश केतना सड़ल बा सड़क पर पड़ल
खुशी जब पराइल, जे बसाइल । जिन्दगी से.....

गीत के जिंदगी जियल जात नइखे

डॉ॰ रामरक्षा मिश्र 'विमल'

पीर सउँसे बदन अइसे समा गइल बाटे
गीत के जिंदगी हमसे जियल जात नइखे !
जिंदगी के परत-दर-परत का उघारीं हम ?
साध अब कौन बँचल बा जवन सँवारीं हम ?
प्रीत के धार में तनिको बहल जात नइखे !
आसरा इंतजारा चिड़चिड़ा बना दिहलस
हंस के मुँह प चटकन उल्लुओ लगा दिहलस
साँच के आज जहर हमसे पियल जात नइखे !
जा रहल बा लगे हप्ता उपास ए बाबू
भूख कहिया रहे अब ना इयादि ए बाबू
घूँट भर पनिओ हमसे पियल जात नइखे ।
बाहबाही, बड़ाई सुनिके हम अघा गइनीं
असलियत के भरम में हर जगह ठगा गइनीं
अब 'विमल' दाद प्रतिभा पर सुनल जात नइखे !

गीत

डॉ. शारदा पाण्डेय

का होखेला अचके ई मन
लरज लजा जाला !
कहे के चाहींले किछऊ
अउर कहा जाला !
बउरल अमवा, फूलल महुआ
मदकन टपक-टपक जाला
घन बरिसे पानी

अगन अंगार दहलि जाला !!
कहे के चाहींले किछऊ
अउर कहा जाला !
साँस-साँस में पिहके कोइल
नस-नस पीर टभक जाला !!
कहे के चाहींले किछऊ
अउर कहा जाला !
चुप रहलो पर, रोम-रोम से
गीत गुजर जाला !!
कहे के चाहींले किछऊ
अउर कहा जाला !

गीत

शारदानन्द प्रसाद

दूलम भइल आँख के नींन
फार गइल सिर पर के छतरी
बरिस रहल बा दुख के बदरी
बनल अवस्था दीन
दूलम भइल आँख के नींन

खुलल गाँठ बान्हल गठरी के
बिखरल साज सहज ठठरी के
मनके सरधा छीन
दूलम भइल आँख के नींन

कइसे साध जोगाई मन के
हाल इहे चोला के तन के
पानी बिन जस मीन
दूलम भइल आँख के नींन

नेह चुकल बाकी अन्हार बा
राग अभागा बनल भार बा
टूटल बा जब बीन
दूलम भइल आँख के नींन ।

बिदाई गीत

सिराजुद्दीन अन्सारी

कवना जनमवाँ के फेर
माई, कवना जनमवाँ के फेर !
छोटी मुकी रहनी हम घर के बबुनियाँ
पड़त सेनूर माँग, बदलल दुनियाँ
पिया हाथे पगही के छोर
नयना ढरे मोतियन के ढेर ! माई कवना.....

गाँव-जवार केहू रोकहूँ ना आइल
छनही में माया-मोह सब कुछ लुटाइल
पानी बीच पुरइन के पात
भइनीं सरीख एही बेर ! माई कवना.....
रुठ-रुठ बाबा से कुछ कहलो ना जाई
बोलहूँ में मन अब खुदे सकुचाई
बान्हल गइलें हिरनी के पाँव
पलटत भाग में ना देर ! माई कवना.....

छोड़ चलनीं अब गाँव-नगरिया
भूलल जाई कइसे चलल डगरिया
नइहर से अइहें सनेस
बोली कउआ घर के मुँड़ेर ! माई कवना.....
जिनगी में लागल बाटे हँसी और रोवल
केतना कठिन बाटे नेहवा के ढोवल
बरसो बरस के पीरीत
टिस मरिहें साँझ-सवेर ! माई कवना.....

भाषान्तर

'गीतांजलि' से

कोन आलोते पानेर प्रदीप जालिए तुमि धराय आसो

मूल बाँग्ला: रवीन्द्र नाथ टैगोर

अनुवाद: रामबिहारी ओझा 'रमेश'

दिल के दिया जराके कवना बाती से
बतलाई धरती पर रउरा आईले !

हे साधक, हे प्रेमपुजारी, हे पागल
धइके कतने रूप धरा पर धाईले !

ई अपार सनसार दुखावेला मन के
बीन प्रान के तबो रवाँ झनकाईले !

मुखड़ा देखि खिलल कवना महतारी के
घोर विपतियो में रउरा मुसुकाईले !

आगि लगा के अपना सुख का दुनिया में
केकर पता करत सगरो छिछिआईले !

व्याकुल बना रोआवेला रउरा के, के
जेकरा के पुचकारीं, गले लगाईले !

कवना अगम प्रान-सागर में परि उछहल
मरलो से ना डरीं, पँवरते जाईले !

धार के खिलाफ

अनिरुद्ध: दोहरी, सारण **अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'**: सागरपाली, बलिया (उ० प्र०), **अनिल ओझा नीरद**: 28/4, भैरवदत्त लेन, नंदी बगान, सलकिया, हावड़ा-711106, **डॉ. अशोक द्विवेदी**: संपादक: पाती, 47, लेखनगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001, **आनन्द संधिदूत**: इलाहाबाद बैंक, रिजनल ऑफिस, जुली गार्डेन, जंगी रोड, मिर्जापुर **ए. कुमार आंसू**: प्रभा निकेतन, मालाबाग, आरा, **कन्हैया पाण्डेय**: 2ए/298, आवास विकास कॉलोनी, हरपुर बलिया, **कमलदेव राय**: बड़पुर, पो. रामपुर बिन्दालाल, जि. सारण, **कुमार विरल**: द्वारा शत्रुघ्न प्र. सिंह, स्कूल रोड, माड़ीपुर मुजफ्फरपुर, **कैलाश गौतम**: 35, एम. आई. जी. प्रीतमनगर, सुलेमसराय, इलाहाबाद (उ. प्र.), **कृष्ण बालापुरी**: भारतीय स्टेट बैंक, सुखपुर शाखा, सुखपुरा (बलिया), **गंगा प्रसाद अरुण**: एल 4/21, रोड-17, टेल्को कॉलोनी, जमशेदपुर-831004, **डॉ. गजाधर प्रसाद गंगेश**: नन्दगंज, गाजीपुर (उ. प्र.) **गरिमा बन्धु**: इन्द्रपुरी, पटना, **गहबर गोबर्द्धन**: उपमंडल अभियंता (प्रशा.), टेलीफोन भवन, पटना, **गोपाल प्रसाद**: बी. एल. नं. 1, काँकिनारा, उत्तर चौबीस परगना-743126, **गुरुचरण सिंह**: हिन्दी विभाग, ग्राम भारती कालेज, रामगढ़, कैमूर, **चन्द्रेश्वर परवाना**: भटही राजा, अहिरौली बाजार, कुशीनगर (उ. प्र.) -274402, **चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह**: नोनार, भोजपुर, **जगन्नाथ**: संपादक: कविता, श्यामभवन, एस. पी. सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना **जवाहर लाल 'बेकस'**: संपादक: पनघट, रुपांकन, पो. बॉ. 203 पटना, **दयाशंकर तिवारी**: 297, गायत्री भवन, भोटी-मऊ-275101, **देवकुमार पाण्डेय व्याकुल**: प्रणयी निकेतन, गया, **नगेन्द्र भट्ट**: चौक सिनेमा रोड, बलिया (उ. प्र.), **पाण्डेय आशुतोष**: संपादक 'पुरवैया', मलकौनी मंदिर, बगहा 2, प. चंपारण-845105, **पाण्डेय कपिल**: संपादक: भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, रोड-3, इन्द्रपुरी, पटना-24, **पाण्डेय सुरेन्द्र**: बी-2/ एम-123, स्टेट बैंक कॉलोनी, सीतापुर रोड स्कीम, लखनऊ-20, **पी. चन्द्रविनोद**: न्यू एफ/11, हैदराबाद कॉलोनी, बी. एच. यू. परिसर, वाराणसी-221204, **बरमेश्वर सिंह**: धनहीहा, कोइलवर (भोजपुर), **बलभद्र**: जोगीवीर, करियांव, भोजपुर-802183, **बलभद्र कल्याण**: नई धारा मार्ग, शेखपुरा, पटना, **ब्रजेश नारायण झा**: ढोढ़ा टोली, (पावरगंज), लोहरदगा-835302, **मनोज कुमार सिंह 'भावुक'**: द्वारा, श्री रामदेव सिंह, बी 91, तुरी (पिपरी), जि. सोनभद्र (उ. प्र.), **डॉ. मधु वर्मा**: बी-204 चारमीनार, राजेन्द्रनगर, पटना-16, **डॉ. माहेश्वर तिवारी**: 'हरसिंगार', ब/म-48, नवीन नगर, मुरादाबाद-244001, **मिथिलेश 'गहमरी'**: गहमर, गाजीपुर (उ. प्र.)-232327, **मुफलिस**: चौधरी टोला, डुमराँव, बक्सर-802119, **योगेन्द्र पाण्डेय 'योगेश'**: आनन्द नगर, सिवान, **राजकुमार 'प्रेमी'**: रमना रोड, पटना **डॉ. राजेन्द्र भारती**: संपादक: भोजपुरी विकास चेतना; अभिनंदन कुटीर, सतनी सराय, बलिया, **राधिका रंजन सुशील**: तरुण नगर गुवाहाटी-781005, **राम जियावन दास 'बावला'**: भीखमपुर, चंदौली (उ. प्र.) **रामबिहारी ओझा 'रमेश'**: पाथरडीह (धनबाद), **राम निहाल गुंजन**: नया शीतल टोला, आरा, **रामप्रताप तिवारी 'प्रताप'**: उपाध्यक्ष, शारदा संस्थान, रेवती, बलिया-277209, **डॉ. रामरक्षा मिश्र 'विमल'**: केन्द्रीय विद्यालय सी आर पी एफ ग्रुप सेन्टर, दुर्गापुर-713214 **रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'**: शंकर भवन सिविल लाइन्स, बक्सर, **रिपुंजय निशान्त** रामराज चौक, दहियाँवाँ, छपरा, **शम्भुनाथ उपाध्याय**: तोखमपुर, बलिया, **डॉ. शम्भुशरण**: एन-14 प्रोफेसर कॉलोनी, चित्रगुप्तनगर, कंकड़बाग, पटना-20, **शिवपूजन लाल विद्यार्थी**: प्रकाशपुरी, आरा, **शिवजी पाण्डेय 'रसराज'**: मैरीटार, बलिया, **डॉ. शिवदास पाण्डेय**, सुधांजलि, पी एण्ड टी कॉलोनी के निकट, मीठनपुरा, मुजफ्फरपुर-842002 **डॉ. शारदा पाण्डेय**: 142 बाघम्बरी गृहयोजना, भरद्वाजपुरम, प्रयाग-211006, **शारदानन्द प्रसाद**: द्वारा, डॉ. रंजन विकास, पश्चिमी शिवपुरी, शास्त्रीनगर, पटना-23, **श्रीराम सिंह 'उदय'**: बांसडीह, बलिया, **सत्यनारायण**: डी ब्लॉक, कदमकुआँ, पटना-3, **डॉ. स्वर्ण किरण**: **संपादक**: नालन्दा दर्पण, सोहसराय, नालन्दा **सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'**: भगवानपुर, कैमूर-821102, **सिराजुद्दीन अंसारी**: सिराज विला, बैंक कॉलोनी, आलमगंज, पटना-7, **स्वामी फंदीतीर्थानन्दपुरी**: अद्वैत आश्रम, राम डिहरा, तिलौथू-821312, **सूर्यदेव पाठक 'पराग'**: उच्चविद्यालय, मढ़ौरा-841418 **हरिकिशोर पाण्डेय**: आदर्श कॉलोनी, श्याम चक, छपरा-841014, **डॉ. हरीन्द्र हिमकर**: प्रोफेसर कॉलोनी, रक्सौल-845305, **हीरालाल 'हीरा'**: भारतीय स्टेट बैंक, बलिया (उ. प्र.), **त्रिलोकी नाथ तिवारी 'लोकदर्शी'**: 2424/एच. एस. एफ. आयुध निर्माणी इस्टेट, मुरादनगर, गाजियाबाद, **भगवती प्रसाद द्विवेदी**: महामंत्री अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पो. बॉ